अक्तूबर (प्रथम) 2022 | ₹35.00

चंपक

J

VISIT…

चंपक

अक्तूबर (प्रथम) 2022 अंक : 1246

संस्थापक
विश्वनाथ
1917-2002

सुनो कहानी

बापू का सहयोग सिद्धांत	4
दौड	10
गांधीजी से सबक	16
बूढ़े आदमी का घोड़ा	20
पत्तों में छेद	24
सूझबूझ से जीत	30
सब से अच्छा कौन	37
अजनबी	47

मुखपृष्ठ

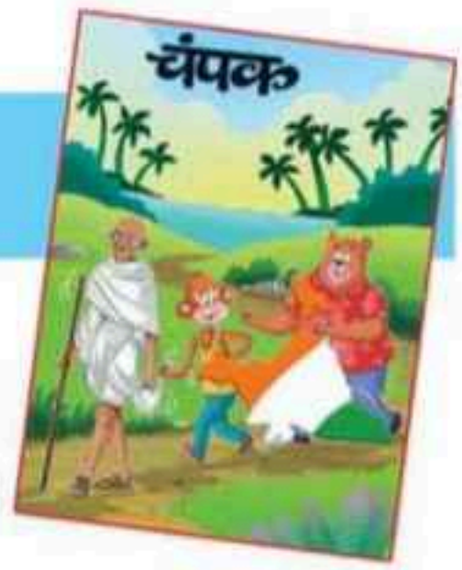

महात्मा गांधी के जीवन से हम कई सबक सीख सकते हैं जो व्यक्तिगत रूप से बेहतर बनने में हमारी मदद करते हैं. उन्होंने कैसे आप की मदद की? इस बारे में अपने विचार हमारे साथ साझा करें.

मन बहलाओ

सुंदर रंग भरो	7
देखो हंस न देना	8
बताओ तो जानें	14
छिपे चित्र ढूंढ़ें	19
मिलान करें	23
बिंदु मिलाओ	28
रास्ता बताओ	29
शब्द ढूंढ़ें	33
स्मार्ट	34
चित्र पूरा करें	36
अंतर बताओ	46

चित्र कथाएं

डमरू का फ्री गिफ्ट्स	9
चीकू	26
दादाजी और गांधी जंयती	42

विशेष पृष्ठ

मजेदार विज्ञान	15
आप के सवाल मेनका आंटी के जवाब	41
नन्ही कलम से	44

संपादक व प्रकाशक ● परेश नाथ

संपादकीय, विज्ञापन व प्रकाशन कार्यालय :
दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 41398888, 23529557-62.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, बीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा - 121003 से मुद्रित. संपादक - परेश नाथ.

Sold on the condition that jurisdiction for all disputes concerning sale, subscription and published matter will be in courts/forums/tribunals at Delhi.

चंपक में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और किसी से उन की समानता संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा भेजना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी. प्रेषित रचनाओं की सुरक्षा/वापसी के लिए कार्यालय का कोई उत्तरदायित्व नहीं है.
दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए.
'चीकू' शीर्षक भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है. वार्षिक मूल्य केवल क्रेडिट कार्ड/चैक/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा ही 'चंपक' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट,
नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. नहीं. एक प्रति रु. 35.00 (बिना सीडी के),
वार्षिक रु. 966, दो वर्ष रु. 1848. (भारत में)

ग्राहक बनने और वितरण के बारे में विस्तृत जानकारी रविवार करें:
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055
फोन: 91-11-41398888, एक्सटें. 119, 221, 264.
मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सऐप: 08588843408
ईमेल: subscription @ delhipress.in

दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड
बी-3, वडाला उद्योग भवन, नेगांव क्रॉस रोड, वडाला मुंबई-400031. फोन : 91-22-24122661, 43473050.

- रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल: article.hindi @ delhipress.in
- निमंत्रणों व प्रेस सूचनाओं के लिए ईमेल: invites.pressrelease @ delhipress.biz
- संपादक को पत्रों के लिए ईमेल: editor @ delhipress. biz
- ग्राहक विभाग के लिए ईमेल: subscription @ delhipress.in

अपनी कहानी, कविता, ड्राइंग्स तथा क्राफ्ट्स यहां भी भेज सकते हैं:
writetochampak@delhipress.in या एसएमएस करें: 09619557613
www. facebook.com/ChampakMagazine और https://www.youtube.com/ user/ ChampakSciQ

RHADOO SAHIB

बापू का सहयोग सिद्धांत

कहानी • विभा बत्रा

अपने सामने की सीट पर लात मारते हुए इलैंगो बुदबुदाया, 'और उस के बाद मैं हंचल की बाह को उस की पीठ के पीछे ऐंठ कर मोड़ने जा रहा हूं. मैदान में उसे एक निंजा किक मार कर उस की तोंद पर एक जोरदार पंच मारूंगा.'

स्कूल बस की खिड़की से बाहर देखते हुए पर्निया ने सांस खींची. यह हर दिन वाली वही कहानी थी. हरेक दिन इस दुनिया का सब से घटिया लड़का हंचल, इलैंगो को धमकाया करता, हर दिन इलैंगो उस से बदला लेने का संकल्प लेता, हर दिन स्कूल के विलेन को पछाड़ने के सपने देखता और उस के अगले दिन कुछ भी नहीं करता था. कराटा किक या जूडो चौप मारने की भूल जाता, इलैंगो सिर्फ अपनी प्यारी सी जान बचाने के लिए दुम दबा कर भाग लेता जब उसे हंचल धमकाया करता था.

''तुम अभी देखना, मैं उस सुपर विलेन को ऐसा सबक सिखाऊंगा कि वह मुझ पर नजर उठाने से भी घबराएगा,'' इलैंगो ने कुंगफू स्टाइल में अपनी मुद्रा बनाते हुए कहा.

''हमेशा इतने हिंसक होते हो,'' पर्निया ने सिर हिलाते हुए कहा.

''और कोई रास्ता भी तो नहीं है.'' ठीक उसी समय एक ट्रैफिक सिग्नल पर स्कूल बस रुक गई और पर्निया की नजर गांधीजी की तसवीर वाले एक चमकदार बड़े और मोटे अक्षरों वाले होर्डिंग पर पड़ी, जिस पर लिखा था, 'बापू की 153वीं जयंती,' साथ में चमकदार बड़ेबड़े और मोटे अक्षरों यह भी में लिखा था, ''आइए, उन के सिद्धातों का पालन करते हुए इसे मनाएं.''

और तभी अचानक उस के दिमाग में एक विचार कौंधा. वह इलैंगो की तरफ मुड़ी, उस की आंखें उत्साह और खुशी से चमक रही थीं. ''यह एक अच्छा रास्ता है. अपनेआप से पूछो कि बापू ने क्या किया और उस के बाद इसे करो.''

इलैंगो ने मुंह फेरते हुए कहा, ''क्या?''

''मेरे पास एक आइडिया है, बहुत ही आसान सा है,'' पर्निया ने विस्तार से कहा, ''गांधीजी की शिक्षाएं क्या हैं?''

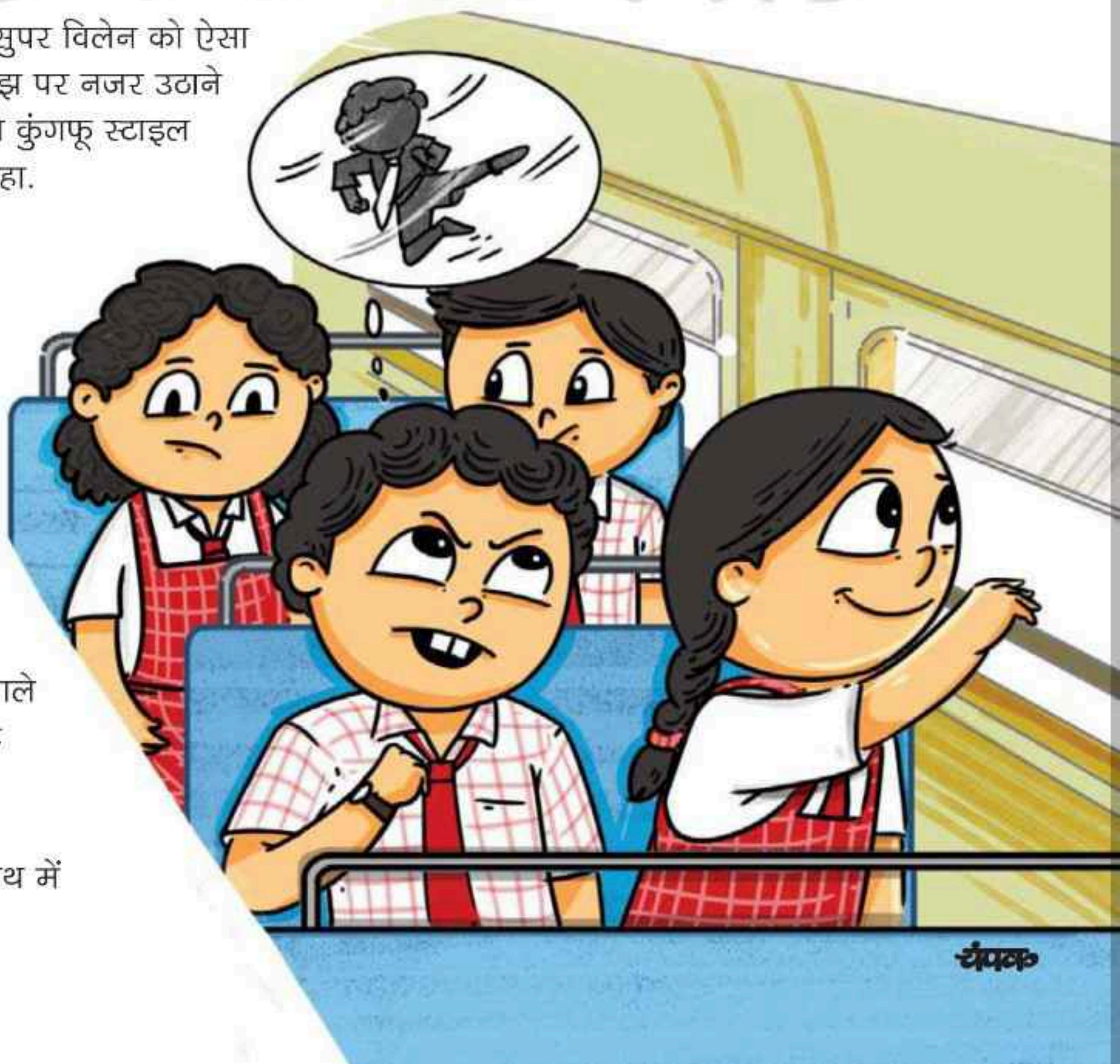

"हर कोई इसे जानता है," इलैंगो ने जवाब दिया. "हमेशा सच बोलो, हमेशा इमानदार बने रहो..."

उस ने उत्साह बढ़ाते हुए अपना सिर हिलाया.

"सभी जीवित प्राणियों और जीवजंतु, पेड़पौधों के प्रति दयालु बनो..." उस ने कहना जारी रखा.

"हिंसक मत बनो, दूसरों को नुकसान मत पहुंचाओ," एक अर्थपूर्ण नजरों से उसे देखते हुए पर्निया ने कहा.

"यह सब हंचल को बताओ," इलैंगो ने बुरा सा मुंह बनाते हुए कहा.

"और सब से महत्त्वपूर्ण शिक्षा," एक शरारत भरी मुसकान के साथ वह बोली, "हरेक के साथ सहयोग करो. इसलिए बिलकुल वैसा ही करो. हंचले के साथ सहयोग करो."

इलैंगो के चेहरे पर हैरानी का भाव फैल गया. "तुम्हारे कहने का मतलब क्या है?"

वह आगे की ओर झुकी और उस के कान में फुसफुसाई.

"क्या तुम निश्चिंत हो, यह काम करेगा?" इलैंगो ने अपनी योजना साझा करने के बाद कहा.

"चलो, पता लगाते हैं," वह अपने हाथों को रगड़ते हुए चिल्लाई.

अगले दिन सुबह असैंबली में पर्निया ने इलैंगो को हल्के सा धक्का दिया. उस अपने मुंह का पानी गटका, जब उस की नजर हंचल पर गई. वह हंस रहा था और अपने बगल वाले बच्चे से बातें कर रहा था. इलैंगो ने अपनी कमीज ठीक की, अपना गला साफ किया और धीरेधीरे हंचल की ओर चल पड़ा.

हंचल की मनमोहक आंखें चमक उठीं. "देखो, यहां पर कौन है," इलैंगो ने कहा.

इलैंगो का दिल तेजी से धड़कने लगा था. उस ने हैरानी से कई बार सोचा कि क्या पर्निया की योजना काम करेगी? उस ने गहरी सांस खींची और होंठों पर एक मीठी मुसकान बिखेरी, "गुड मौर्निंग, यह मैं हूं, गूफी."

हंचल ने उसे कई असभ्य उपनाम दे रखे थे, क्योंकि उस के दांत उभरे हुए थे. जैसे नासमझ, बग बनी, नुकीला और न जाने क्या नाम, लेकिन आज पहली बार ऐसा हुआ था कि इलैंगो खुद को वैसा ही बता रहा था.

"क्या तुम खाली हो? मैं धमकाने के लिए तैयार हूं. कृपया शुरू हो जाओ. तुम मुझे धक्का दे सकते हो, मेरे बाल उलझा सकते हो, मेरे बैग को खींच सकते

हो,'' इलैंगो ने हंचल को अपना बैग थमाते हुए कहा वह हैरानी से टकटकी लगाए इलैंगो को देख रहा था. आखिर यह हो क्या रहा था? यह तो खुद को ही धमकाना चाह रहा था? हंचल के दोस्त आपस में एकदूसरे को हैरानी से देख रहे थे और मन ही मन पूछ रहे थे.

'पागल है,' हंचल बुदबुदाया और दूर हो गया. ''आओ, चलें,'' उस ने अपने दोस्तों से कहा और तेजी से क्लास के अंदर भागा.

''क्या हुआ? क्या तुम अभी व्यस्त हो,'' इलैंगो ने उसे जोर से पुकारा. ''मैं तुम्हें लंच के समय मिलूंगा.''

उस का दिल उत्साह में तेजी से धड़क रहा था. बापू का सहयोग सिद्धांत लगता था काम करने लगा था.

इलैंगो लंच के समय कैंटीन में जाते ही हंचल के पास भागा.

''गुड आफ्टरनून,'' इलैंगो ने विनम्रता से उस का अभिवादन किया. ''मैं वापस आ गया हूं. उम्मीद है कि मुझे अब धमकाने के लिए तुम स्वतंत्र होंगे?''

उस ने अपना लंचबौक्स और पानी की बोतल उस की ओर बढ़ाई. ''यहां तुम मेरा डब्बा खत्म कर सकते हो और पूरा पानी गिरा सकते हो.''

अचानक कैंटीन में सन्नाटा पसर गया.

हंचल हक्काबक्का हो कर इलैंगो को टकटकी लगाए देखने लगा. क्या उस ने अपना दिमागी संतुलन खो दिया है? 'तुम्हारे साथ गलत क्या हुआ है?' वह बुदबुदाया.

यह सवाल सब के दिमाग में उठ रहा था.

''क्या मैं बाद में वापस आऊंगा?'' इलैंगो बोलता चला गया, ''स्कूल से छुट्टी के बाद जब मैं स्कूल बस में चढ़ूंगा? तुम मेरे बैग को जमीन में फेंक सकते हो या मेरे पैंसिलबौक्स से चीजें निकाल सकते हो. क्या ऐसा ठीक रहेगा?''

हंचल ने इलैंगो पर तिरछी नजरें डालीं और वहां से चला गया.

इलैंगो मंदमंद मुसकराया और अपनी कुरसी पर वापस आ कर धम्म से बैठ गया, जहां पर्निया उस का इंतजार कर रहा था. सब से अच्छे दोस्त कुरसी पर कम ही बैठे मिलते हैं.

''मैं ने बताया था न, मेरी योजना काम करने लगेगी,'' उस ने अपने दांत दिखाते हुए कहा. ''हंचल, अब तुम्हें आगे परेशान नहीं करेगा.''

''बहुतबहुत धन्यवाद,'' इलैंगो ने हैरानी जाहिर करते हुए कहा. उस की आंखें राहत से चमक रही थी. उस ने अपने लंचबौक्स को पर्निया की तरफ सरका दिया.

''मुझे धन्यवाद मत दो, गांधीजी को धन्यवाद कहो,'' पर्निया ने नन्हे इडली को उठाते हुए कहा.

इलैंगो ने बापू को तहेदिल से धन्यवाद कहा. ●

सुंदर रंग भरो

BHADUR SAHIB

देखो हंस न देना

अमन (सैंडी से) : आदमी ने अपने रुपयों को फ्रीजर में क्यों रख दिया?
सैंडी : नहीं पता?
अमन : वह कोल्ड और हार्ड कैश चाहता था.

डैनियल, 9 वर्ष
मैंगलुरु

सोनू (मम्मी से) : मम्मी, आप तब क्या करेंगी जब आप को पता चलेगा कि मैं ने पूरी क्लास में फर्स्ट रैंक हासिल की है?
मम्मी : अरे बेटा, मैं तो खुशी से पागल हो जाऊंगी.
सोनू : मम्मी, यही कारण है कि मैं फेल हो गया ताकि आप पागल न हों.

अरिजीत, 12 वर्ष
कोलकाता

पूर्वी (अमाला से) : पोर्कुपाइन यानी साही ने कैक्टस यानी नागफनी से क्या कहा?
अमाला : मुझे लगता है, उस ने कहा, ''क्या यह तुम्हारी मम्मी है?''

चारु, 8 वर्ष
चैन्नई

मम्मी (बच्चे से) : आज तुम ने क्या सीखा?
बच्चा : लिखना.
मम्मी : तुम ने क्या लिखा?
बच्चा : अभी तक मैं ने पढ़ना नहीं सीखा. इसलिए मैं नहीं बता सकता कि क्या लिखा.

जुडे, 12 वर्ष
बैंगलुरु

हाहाहा हाहाहा हीहीही हीहीही

अनन्या (अनुज से) : सागर को टुकड़ों में काटने के लिए तुम किस चीज का इस्तेमाल करोगे?
अनुज : सी सौ का इस्तेमाल कर सकते हो.

मेघना, 10 वर्ष, कोच्चि

टीचर (तान्या से) : तान्या, मैप उठाओ और अमेरिका को ढूंढ़ो.
तान्या : ये रहा अमेरिका.
टीचर : हां, तो बच्चो, अमेरिका की खोज किस ने की?
बच्चे : मैम, तान्या ने.

प्रियंका, 9 वर्ष
दिल्ली

टीचर (छात्र से) : सब से ताकतवर जानवर कौन है?
छात्र : स्नेल यानी घोंघा वह सब से मजबूत होता है क्योंकि वह अपनी पीठ पर अपने घर को ढोता रहता है.

अर्जुन, 9 वर्ष
कोलकाता

बौबी (पापा से) : पापा, जब मैं बड़ा हो जाऊंगा तो क्या आप मुझे अपनी सारी संपत्ति और अधिकार सौंप देंगे?

पापा : नहीं, मैं अपने अधिकार तुम्हें नहीं सौंपूंगा.
बौबी : तो पापा, वह खुशकिस्मत व्यक्ति कौन होने जा रहा है?
पापा : एक साधु.
बौबी : ठीक है, मैं बाहर जा रहा हूं?
पापा : तुम कहां जा रहे हो?
बौबी : साधु बनने.

पारुल, 8 वर्ष
मुंबई

मनु (तनु से) : तुम ने एक पैर में लाल और दूसरे में नीली जुराब क्यों पहन रखी है? क्या तुम्हें पता नहीं है कि यह एक अजूबी जोड़ी है?
तनु : हां, पता है. मेरे घर में एक ऐसी ही अजूबी जोड़ी है, एक लाल और दूसरी नीली जुराब की.

अजय, 10 वर्ष
मुंबई

मृत सागर पर लैक्चर देने के बाद टीचर ने पूछा - तुम सभी ने मृत सागर के बारे में क्या सीखा?
सोया हुआ छात्र : मृत, किसी ने भी मुझे नहीं बताया कि सागर बीमार था.

अन्ना, 12 वर्ष
गोवा

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:
चंपक, दिल्ली प्रेस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई - 400031
ईमल : **writetochampak@delhipress.in**
और **SMS: 8657402248**
ऑनलाइन विजिट करें :
www.facebook.com/ChampakMagazine
https://www.youtube.com/ChampakSciQ

डमरू का फ्री गिफ्ट्स

कहानी ● शिवेश श्रीवास्तव

शैली लोमड़ी ने डमरू को अपनी दुकान पर काम करने के लिए रखा था.

हमारी दुकान के बगल में एक दूसरी दुकान है जो चिंटू बंदर की है और उस की दुकान पर बहुत सारे ग्राहक आते हैं.

वे सब के सब उस की दुकान पर क्यों जाते हैं?

क्योंकि वह सभी को बहुत ज्यादा डिस्काउंट देता है.

तो हमें भी क्यों नहीं उसी की तरह डिस्काउंट देना चाहिए?

चलो, हम भी कुछ बढ़िया करते हैं. हम अपने सभी ग्राहकों को फ्री गिफ्ट्स देंगे.

बहुत बढ़िया आइडिया है, मैडम.

लेकिन मुझे एकदिन के लिए शहर जाना है. इसलिए तुम दुकान को संभालना और गिफ्ट्स देने की व्यवस्था करना.

चिंता न करें मालकिन. मैं हरेक चीज का खयाल रखूंगा.

शहर की यात्रा से लौटने के बाद शैली ने अपनी दुकान से जानवरों को अपने हाथों में गिफ्ट ले कर बाहर निकलते हुए देखा.

दुकान पर...

बहुत अच्छा कार्य डमरू.

धन्यवाद, मालकिन.

इस का मतलब यह है कि बिक्री शानदार हुई है. हम ने कितने रुपए कमा लिए, डमरू?

हम ने एक भी रुपया नहीं कमाया.

तुम्हारा कहने का क्या मतलब है? उन सभी जानवरों का क्या मतलब था जो हमारी दुकान पर आए?

जैसा कि आप ने मुझे बताया था, मैं ने उन सभी को फ्री में गिफ्ट दिए जो कोई भी दुकान पर आया.

SONAL

तुम्हारे कहने का मतलब है कि हर कोई सिर्फ गिफ्ट बटोरने के लिए दुकान पर आया?

बिलकुल, सही मालकिन. देखिए तो, कितने सारे जानवर हमारी दुकान पर आए.

लेकिन उन्होंने कुछ भी नहीं खरीदा, बेवकूफ. सभी गिफ्ट्स बेकार चले गए.

चिंता न करें मालकिन. मैं ने एक गिफ्ट आप के लिए भी बचा रखा है.

दौड़

कहानी • कुमुद कुमार

चंपकवन में काला भालू और जंबो हाथी रहता था. दोनों दोस्त बड़ी हिम्मत वाले और कुछ कर दिखाना चाहते थे, लेकिन उन का मोटापा देख कर सब उन की खिल्ली उड़ाते और उन को नाकारा व आलसी समझते.

अब वे अपनी काबिलियत साबित कर के किसी ऐसे अवसर की तलाश में थे कि सब को बता सकें कि वे नाकारा और आलसी नहीं हैं.

चंपकवन के राजा शेरसिंह की खेलों में बड़ी रुचि थी. वे टोक्यो ओलिंपिक की खबरें बड़े ध्यान से पत्रपत्रिकाओं और टीवी चैनलों पर देखते और सुनते थे. वह मन ही मन सोचते, 'काश, मेरे राज्य में भी ओलिंपिक जैसी बड़ी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन होता.'

राजा दिनरात इसी बारे में सोचते रहते. एक दिन उन्होंने अपने मंत्री जोजो सियार को अपने मन की बात बताई.

राजा की बात सुन कर जोजो ने कहा, ''महाराज, अब भी वनवासियों के मन में कोरोना वायरस का डर है. राज्य ओलिंपिक जैसी बड़ी खेल प्रतियोगिता तो नहीं करा सकता, लेकिन एक दौड़ प्रतियोगिता हो सकती है. इस में हर कोई भाग ले सकता है, क्योंकि जंगल में भागना सब को आता है. इस के लिए कोई विशेष तैयारी भी नहीं करनी पड़ेगी और न ही इस में बड़ी भीड़ इकट्ठी होगी.''

''क्यों जोजो, ऐसे कैसे होगा?'' राजा ने हैरानी से पूछा.

''क्योंकि महाराज, हमारी दौड़ प्रतियोगिता अनोखी होगी. वह स्टेडियम में न हो कर जंगल के ऊबड़खाबड़ रास्ते पर होगी. सीधे और समतल रास्ते पर तो कोई भी भाग ले, असली हिम्मत वाला धावक तो वह है, जो ऊबड़खाबड़ रास्ते पर दौड़ कर दिखाए.''

''वाह मंत्री, हमें तुम्हारी बुद्धिमत्ता पर गर्व है. इस से स्टेडियम में भीड़ भी नहीं लगेगी और खेल प्रतियोगिता भी संपन्न हो जाएगी. इस अनोखी दौड़ प्रतियोगिता को करवाने की जिम्मेदारी तुम्हारी होगी.''

अब जोजो इस प्रतियोगिता को संपन्न कराने की योजना बनाने लगा. वह खेल मंत्री लंबू जिराफ से मिला. उस के साथ जा कर जंगल की सब से खराब सड़क चुनी. दौड़ पूरी कराने के लिए नदीनाले,

ऊबड़खाबड़ जमीन, छोटीछोटी पहाड़ियों और अनेक झाड़झंकार को पार करना पड़ा. मंत्री को ऐसे ही 5 किलोमीटर लंबे रास्ते की तलाश थी.

ठेकेदार बैडी लोमड़ को जैसे ही यह पता चला कि दौड़ प्रतियोगिता के लिए ट्रैक देखा जा रहा है, वह एकदम सतर्क हो गया. उस ने सरकारी इंजीनियर रौकी नेवले से मिल कर सांठगांठ शुरू कर दी.

बैडी यह समझता था कि इस प्रतियोगिता के लिए 5 किलोमीटर का ट्रैक तैयार होगा. इस का ठेका कम से कम 2 करोड़ रुपए का होगा और ठेका यदि उस को मिल गया तो उस की और रौकी की अच्छी कमाईहो जाएगी.

ठेका कोई और न ले ले, इस जल्दबाजी में बैडी 10 हजार में रौकी से ट्रैक का नक्शा बनवा कर राजा के पास ले गया.

नक्शा देख कर महाराजा ने उसे डपटते हुए कहा, ''बैडी, तुम से किस ने कहा कि हम ट्रैक बनवा रहे हैं. हमें तो ट्रैक बनवाना ही नहीं है. तुम्हें सरकारी पैसे हड़पने के अलावा और कोई बात समझ में नहीं आती क्या? ले जाओ, इस नक्शे को यहां से उठा कर और जब तक हम न कहें, अपनी योजना बना कर मत लाया करो.''

राजा की डांट खा कर वह अपना सा मुंह ले कर रह गया. उस ने नाराज हो कर उस ट्रैक वाले रास्ते में ट्रक भर कर कंकड़रोड़े बिछवा दिए जिस से कि उस

रास्ते में दौड़ प्रतियोगिता आयोजित ही न हो सके.

मंत्री को इस बात का पता चला कि बैडी ने रास्ते में कंकड़रोड़े डलवा दिए हैं, वह राजा के पास पहुंचा और बोला, ''महाराज, मैं ने सड़क की ठीक से जांच की. रास्ता काफी कठिन है, लेकिन अगर उस में कुछ कंकड़रोड़े डलवा दिए जाएं तो हमारे धावकों की असली परीक्षा हो जाएगी. फिर तो इस अनोखी प्रतियोगिता का मजा ही कुछ और होगा.''

राजा ने तभी बैडी को बुलवाया और उस से कहा, ''बैडी, चलो, मैं तुम्हें एक सरकारी ठेका देता हूं. तुम एक ट्रक कंकड़रोड़े उस रास्ते में डाल दो जो प्रतियोगिता के लिए चुना गया है.''

बैडी यह सुन कर खुश हो गया. उस ने सोचा, 'मैं ने तो दौड़ को प्रभावित करने के लिए पहले ही वहां कंकड़रोड़े डलवा दिए थे. अब यह मूर्ख राजा मुझे इस के लिए भुगतान करने जा रहा है,' यह सोच कर वह मन ही मन मुसकराया.

तभी खेल मंत्री लंबू दौड़ते हुए आया और बोला, ''महाराज, महाराज.''

''हां, हां, लंबू बोलो, क्या बात है?''

''महाराज, अब हमें प्रतियोगिता वाली सड़क पर कंकड़रोड़े डलवाने की जरूरत नहीं है, किसी ने रात में वहां ट्रक भर कर कंकड़रोड़े डलवा दिए हैं,'' लंबू ने बताया.

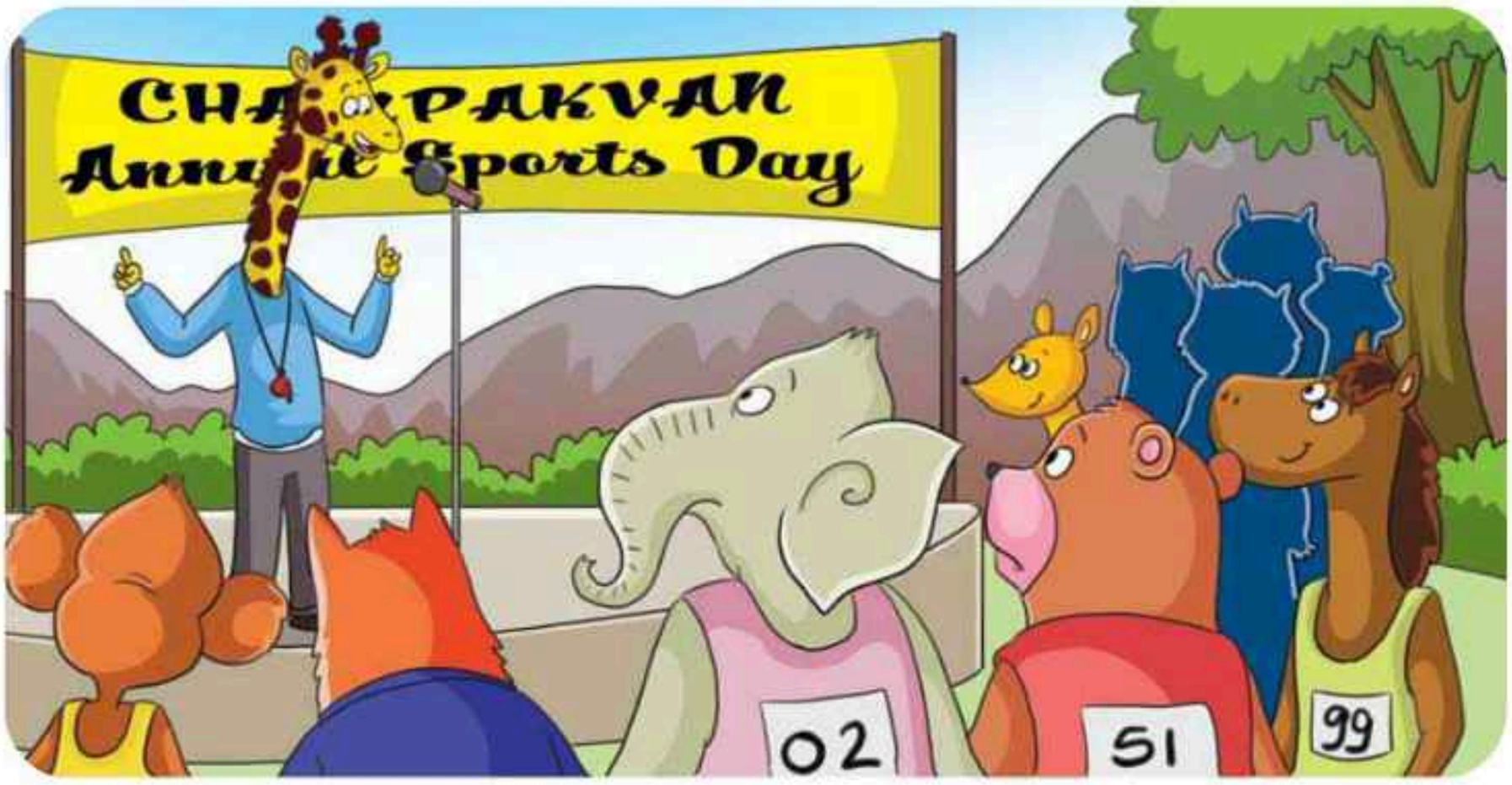

हाथी ने ब्लैकी का मजाक उड़ाया, ‘‘ब्लैकी, अपना सिर मेरे भारी पैर से बचा कर रखना, नहीं तो तुम्हारा लाललाल भेजा बाहर आ जाएगा.’’

यह सुन कर सभी एक बार फिर खिलखिला कर हंस पड़े.

‘‘अरे लंबू , यह तो तुम ने बड़ी अच्छी खबर सुनाई. अब बैडी का यह ठेका भी गया, जो सरकारी पैसा कंकड़रोड़ी डलवाने में लगना था, अब वह पैसा प्रतिभागियों को इनाम देने में खर्च किया जाएगा.’’

बैडी की सारी होशियारी धरी की धरी रह गई. वह सोचने लगा, कभीकभी ज्यादा होशियारी दिखाना भी महंगा पड़ जाता है. वह दुखी हो कर वहां से चलता बना.

जिस दिन दौड़ प्रतियोगिता शुरू होने वाली थी, उस दिन ब्लैकी और जंबो भी अपनी किस्मत आजमाने वहां पहुंच गए. उन्हें देख कर सब हंसने लगे. तेज धावक टौमी घोड़े ने हंसते हुए कहा, ‘‘ब्लैकी और जंबो, तुम क्यों अपना समय खराब करने के लिए आ गए, ऐसे ट्रैक पर तुम्हारा मोटा थुलथला शरीर 100 मीटर भी नहीं दौड़ पाएगा. तुम दोनों बीच रास्ते में ही ढेर हो जाओगे.’’

यह सुन कर सब जोरजोर से हंसे.

तभी सोनू हिरन ने भी उन का मजाक बनाते हुए कहा, ‘‘ब्लैक, तुम तो पहाड़ी से लुढ़क कर नदी में बह जाओगे और जंबो तुम थक कर कीचड़ में बैठ जाओगे. इस से अच्छा है, तुम दोनों यहीं बैठ जाओ.’’

एक बार फिर सब ठहाका लगा कर हंसे

अभी ठहाकों की आवाज थमी भी नहीं थी कि जंबो

ब्लैकी यह सुन कर घबरा गया. वह ट्रैक छोड़ कर जाने की सोच ही रहा था कि तभी जंबो ने उस की हिम्मत बढ़ाई. फिर तो वह दौड़ने के लिए रुक गया.

तभी खेल मंत्री लंबू ने माइक से घोषणा की, ‘‘सभी अनोखी दौड़ के प्रतिभागी ध्यान से सुनें. यह दौड़ प्रतियोगिता जोखिम भरी है. इस का ट्रैक उबड़खाबड़, टेढ़ामेढ़ा, कंकड़रोड़ों और झाड़झंकारों से भरा हुआ है. ट्रैक के बीचबीच में नदीनाले, छोटी पहाड़ियां, दलदली और रेतली जमीन भी है, जो इन को पार करने की हिम्मत रखे, वही इस प्रतियोगिता में भाग ले.’’

‘‘एक बात और विजेताओं को आकर्षक इनाम तो दिए ही जाएंगे, लेकिन इनाम क्या होंगे, इस की घोषणा राजा शेरसिंह बाद में करेंगे. इसलिए कोई इनाम के लालच में आ कर अपनी जान जोखिम में न डाले. इस प्रतियोगिता को कराने का एक विशेष उद्देश्य भी है, जिसे राजा शेरसिंह प्रतियोगिता के समापन पर बताएंगे.’’

यह सुन कर कई कमजोर दिल वाले धावकों ने ट्रैक छोड़ दिया, लेकिन ब्लैकी और जंबो ट्रैक पर डटे रहे. वे दिखाना चाहते थे कि कोई उन के मोटापे का चाहे कितना भी मजाक उड़ाए, लेकिन वे किसी से कम नहीं हैं.

खेल मंत्री लंबू के हवाई फायर करते ही अनोखी दौड़ प्रतियोगिता शुरू हो गई. शुरू में ट्रैक सही था, इसलिए सब सरपट दौड़े चले जा रहे थे. ब्लैकी

चलाता कम लुढ़कता ज्यादा था. जंबो भी अपने थुलथुल भारी भरकम शरीर के साथ धीरेधीरे दौड़ता जा रहा था. टौमी घोड़ा और सोनू हिरन तो शुरू में ही काफी आगे निकल गए थे.

तभी एक नाले का दलदल आया और उस में सोनू हिरन जैसे अनेक धावक फंस कर प्रतियोगिता से बाहर हो गए, लेकिन ब्लैकी पानी में तैरता हुआ दलदल में लुढ़कता आसानी से आगे बढ़ गया. जंबो तो पानी और कीचड़ का माहिर खिलाड़ी था, इसलिए वह भी आसानी से आगे बढ़ गया.

उस के बाद एक छोटी सी पहाड़ी आई. उस के ढलानदार रास्ते पर उतरना हर किसी के बस की बात नहीं थी. कइयों की उस पर चढ़ते हुए सांस फूलने लगी. ब्लैकी तो थक कर ढलान के बीच में ही रुक गया. उस के पीछे जंबो हाथी था, उस ने सोचा कि ब्लैकी उस का रास्ता रोक रहा है. यह बात कैसे बर्दाश्त करता. उस ने ब्लैकी को इतनी जोर से किक मारी कि वह हवा में उड़ता हुआ, सब को पीछे छोड़ता दूर नदी में जा कर गिरा.

ब्लैकी को हवा में उड़ता देख सारे धावक हैरान गए, लेकिन जब पता चला कि यह तो जंबो की किक का कमाल है तो फिर किसी की हंसी रुकी नहीं थी.

नदी में गिरते ही ब्लैकी का सिर फटने से बच गया, लेकिन वह खुश था कि दौड़ में सब से आगे निकल गया.

आगे का रास्ता कंकड़रोड़ों से भरा था. जंबो ऐसे रास्ते पर चल ही नहीं सकता था. वह भी प्रतियोगिता से बाहर हो गया. टौमी अभी हिम्मत दिखा रहा था, लेकिन रेतीले रास्ते पर उस का दौड़ना मुश्किल हो गया. रेत में उस के पैर धंसते जा रहे थे. वह थक कर चूर हो गया. उस ने भी हार मान ली. ऐसे एकएक कर के अनेक धावक प्रतियोगिता से बाहर हो गए.

ब्लैकी सब खतरों को पार करता हुआ विजयी रेखा को पार कर गया. जंबो और तीन अन्य धावक भी दौड़ पूरी करने में सफल हो गए, लेकिन ब्लैकी और जंबो की मजाक उड़ाने वाला एक भी धावक दौड़ पूरी न कर सका. अब वे सब के सब शर्मिंदा थे.

राजा शेरसिंह ने विजेताओं को पुरस्कार देते हुए कहा, ''ब्लैकी, जंबो और तीन अन्य प्रतिभागियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मुश्किलें कितनी भी बड़ी क्यों न हों, अगर हमारे अंदर जज्बा हो तो उन्हें पार किया जा सकता है. उन के इसी जज्बे ने उन्हें विजेता बनाया. हमें ऐसे ही बहादुरों की जरूरत थी. आज से वे शाही जासूस नियुक्त किए जाते हैं, जिस से जंगल के दुर्गम से दुर्गम रास्तों को भी वे पार कर सकें. इस अनोखी प्रतियोगिता का यही छिपा उद्देश्य था. वे अपनी परीक्षा में पास हो गए.''

ब्लैकी और जंबो को और क्या चाहिए था. वे तो सिर्फ अपने आप को साबित करने के लिए आए थे कि वे मोटे और आलसी नहीं हैं. उन के शरीर की बनावट ही ऐसी है. इसे साबित करने में वे शाही जासूस भी बन गए. उन्हें और क्या चाहिए था? उन्होंने साबित कर दिखाया कि वे किसी से कम नहीं हैं.

इस के साथ ही यह अनोखी दौड़ प्रतियोगिता संपन्न हो गई. ●

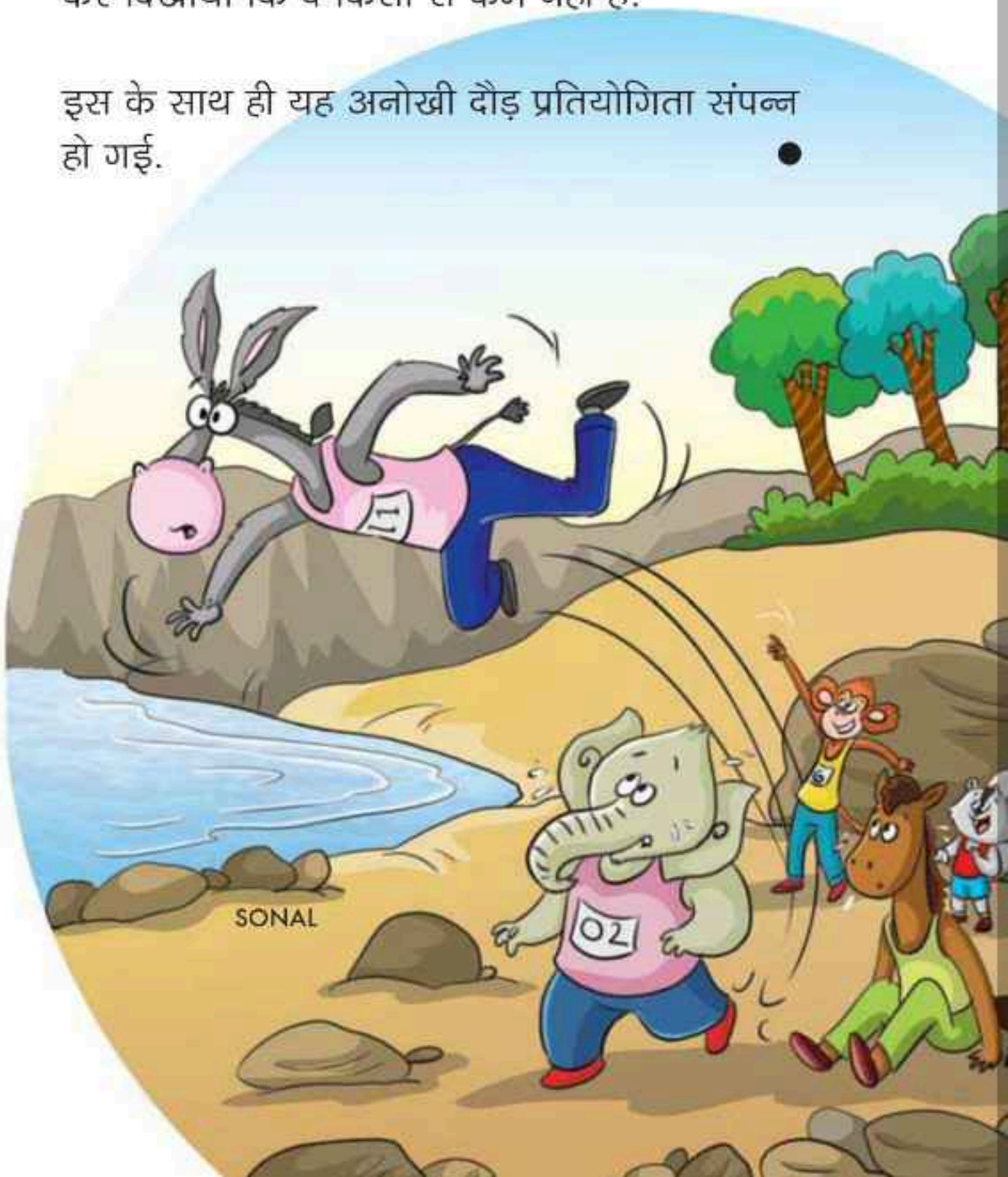

अक्तूबर (प्रथम) 2022

बताओ तो जानें

1. मैं हर किचन में होता हूं
   हालांकि मैं नहीं हूं एक कप
   मैं तेज हूं इसलिए सावधान रहो
   तुम्हारे हरेक भोजन को काटता हूं.

2. यह पत्रिका जिसे तुम पढ़ते हो
   मुझ से ही बनी है
   बहुतों के लिए मैं घर हूं
   जैसे चिड़िया, गिलहरी और मधुमक्खियां.

3. मैं आसमान में रहता हूं
   तुम से बहुतबहुत दूर
   मैं रात में चमकता हूं
   लेकिन मैं एक तारा नहीं हूं.

4. मैं एक प्रकार का वाहन हूं
   मैं कुछ रास्तों पर चलती हूं
   ढेर सारे यात्री ले जा सकती
   तुम्हें स्कूल भी छोड़ती हूं.

देखें तुम कितना जानते हो

1. दुनिया में सब से चौड़ी नदी कौन सी है?
   क. नील
   ख. ब्रह्मपुत्र
   ग. आमेजन
   घ. सांग पो

2. सब से बड़ा अंडा कौन सा पक्षी देता है?
   क. औस्ट्रिच (शुतुरमुर्ग)
   ख. ऐमु
   ग. ऐम्पेरर पैंग्विन
   घ. घरेलू गौरैया

3. कौन से ग्रह को लाल ग्रह के नाम से भी जाना जाता है?
   क. बुध
   ख. मंगल
   ग. शुक्र
   घ. बृहस्पति

4. धरती पर सब से कठोर किस पदार्थ को माना जाता है?
   क. सोडियम
   ख. यूरेनियम
   ग. सोना
   घ. हीरा

उत्तर (बताओ तो जानें) : 1. चाकू (चूना), 2. पेड़, 3. चांद, 4. वस्त्र
उत्तर (देखें कितना जानते हो?) : 1. ग, 2. क, 3. ख, 4. घ.

मजेदार विज्ञान

इनविजिबल इंक

आइए, एक मैसेज यानी संदेश गुप्त रूप से कैसे लिखते हैं, जानते हैं.

आप को चाहिए:

- नीबू
- छोटी कटोरी
- मोमबत्ती
- कौटन इयरबड
- पेपर शीट

ऐसा करें:

1. एक कटोरी में नीबू के आधे भाग को काट कर निचोड़ें ताकि इस का जूस निकले.

2. नीबू के जूस में कौटनबड को डुबो दें और पेपर शीट पर इस से एक संदेश लिखें.

3. संदेश सूख जाने का इंतजार करें. इसे सूखने में 10 मिनट का समय लगेगा.

4. वयस्क व्यक्ति की सहायता लें और मोमबत्ती को जलाएं.

5. मोमबत्ती की लौ के ऊपर पेपर शीट को पकड़ कर रखें और देखें. आप इस के बदले एक आयरन यानी इस्त्री को सावधानी से पेपर शीट पर चला सकते हैं.

देखें:

जैसे ही आप मोमबत्ती लौ के पास पेपर शीट को लाते हैं और इसे गरम करते हैं, तो आप देखेंगे कि आप का संदेश जो गायब हो गया था, वह शीट पर फिर से दिखना शुरू हो गया है.

सोचें:

जादुई तरीके से शीट पर संदेश कैसे प्रकट होता है?

नीबू का जूस तीन चीजों, जैसे शुगर (चीनी) एसिड और पानी से मिल कर बनता है. सामान्यतौर पर नीबू का जूस साफ होता है और इसलिए जब कौटन बड को इस में संदेश लिखने के लिए डुबोया जाता है, तो संदेश विजिबल यानी दिखने योग्य नहीं होता है, लेकिन जब जूस को गरम किया जाता है, तो इस में मौजूद शुगर और एसिड हवा के साथ रिएक्ट यानी प्रतिक्रिया करता है और एक रिएक्शन प्रक्रिया जिसे औक्सीडेशन कहते हैं, के कारण गहरा हो जाता है. मतलब थोड़ा कालापन जैसा आ जाता है. यह औक्सीडेशन प्रक्रिया तब होती है जब एक पदार्थ हवा में मौजूद औक्सीजन के संपर्क में आता है. कमरे के तापमान में नीबू के जूस में मौजूद शुगर औक्सीजन के साथ प्रतिक्रिया नहीं करता है, क्योंकि वहां पर बहुत ज्यादा संपर्क नहीं है. सभी शुगर एक पदार्थ का बना होता है जिसे कार्बन कहा जाता है. जब लौ से इसे गरमी दी जाती है या इस्त्री से इसे गरम किया जाता है तो शुगर में मौजूद कार्बन टूट जाता है और औक्सीजन के सीधे संपर्क में आ जाता है जैसा पहले नहीं हो रहा था. नीबू के जूस का पानी और हवा में मौजूद औक्सीजन कार्बन के साथ प्रतिक्रिया करने लगता है और यह भूरे रंग में बदलने लगता है और गहरा हो जाता है. इनविजिबल इंक यानी अदृश्य स्याही 15वीं शताब्दी में गोपनीय यानी सीक्रेट सूचनाओं के आदानप्रदान करने या ट्रेड सीक्रेट को छिपाने यानी गुप्त रखने के लिए खासतौर पर इस्तेमाल की जाती थी.

पता करें:

सेब जब काटा जाता है तो यह भूरा क्यों हो जाता है?

सेब में शुगर, सिरका अम्ल और पानी भरा होता है. जब इसे काटा जाता है तो ये शुगर जोकि सेब में है, सेब के ही पानी के साथ रिऐक्ट करते हैं और हवा में मौजूद औक्सीजन के साथ नमी बनाते हैं और औक्सीडेशन के कारण भूरे रंग में बदल जाते हैं. नीबू के जूस में मौजूद शुगर के विपरीत सेब में मौजूद शुगर पहले से ही सरल बना होता है और कार्बन के यौगिकों को टूटने के लिए अलग किसी एप्लीकेशन की जरूरत नहीं होती है.

गांधीजी से सबक

कहानी ● हरीश चंद्र पांडे

स्कूल से घर आते ही जौली ने मां को बताया, ''मां, आज मैं ने अचानक बस की खिड़की से बाहर झांका तो लोगों का एक समूह देखा. उन की बस पीठ दिखाई दे रही थी, लेकिन अचानक उन का चेहरा भी दिखाई दिया. उन का पहनावा देख कर मैं हैरान रह गया.''

''उन्होंने क्या पहना था,'' मां ने कहा.

''मां, उन सब ने धोती पहनी थी और धोती के साथ लाठी, आंखों पर चश्मा और कमर में घड़ी लटकी थी.''

''ओह, इतने सारे गांधीजी. हां जौली, अभी तुम पहली क्लास में हो. तुम ने सुना होगा कि गांधीजी को राष्ट्रपिता भी कहा जाता है.''

''हां मां, मैं ने सुना है, उन्हें सारी दुनिया बापू कहती है. वे बहुत बड़े विचारक और मानवतावादी भी थे, लेकिन इस का क्या मतलब है?''

''जौली, यह ठीक वैसा ही है, जैसा तुम बगीचे में जाते समय सोचते हो कि पौधों को पानी दूं या न दूं. कोई लता यदि नीचे गिरी है तो उसे सहारा दिया जाए या नहीं. विचारक भी ऐसा ही होता है.''

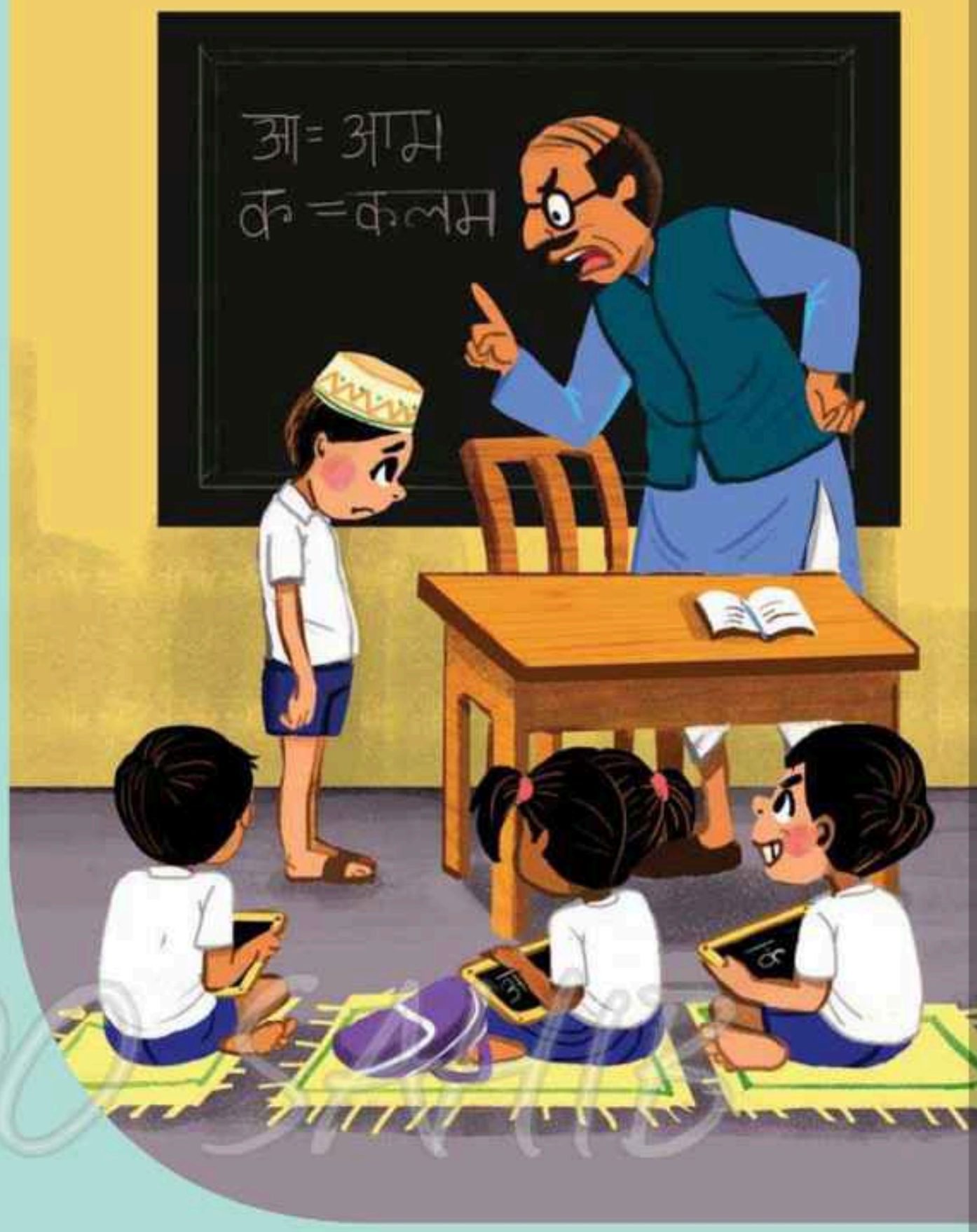

"मां, मुझे और बताओ न."

"जौली, उन के बचपन का नाम मोहनदास करमचंद गांधी था. और उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अल्फ्रेड हाइस्कूल से प्राप्त की थी. एक बार उन के स्कूल में जब निरीक्षक निरीक्षण करने आया तो उन के टीचर ने बच्चों को निर्देश दिया था कि निरीक्षक पर उन का अच्छा प्रभाव पड़ना चाहिए.

"जब निरीक्षक गांधीजी की क्लास में आए तो उन्होंने बच्चों की परीक्षा लेने के लिए उन्हें 5 शब्द बता कर उन का अर्थ लिखने को कहा.

"निरीक्षक की बात सुन कर बच्चे अर्थ लिखने लगे. जब बच्चे लिख रहे थे तो टीचर ने देखा कि गांधीजी ने एक शब्द का अर्थ गलत लिखा है. उन्होंने उन्हें इशारा किया कि वे अपने पड़ोस के बच्चे की नकल कर लें, लेकिन गांधीजी ने ऐसा नहीं किया. उन्हें नकल करना अपराध लगा.

"निरीक्षक के जाने के बाद उन्हें शिक्षक से डांट खानी पड़ी, लेकिन जब उन्होंने शिक्षक से कहा कि आप ने ही सिखाया है कि नकल करना गलत है, तो यह सुन कर उन के शिक्षक बहुत खुश हुए और गांधीजी उन के पसंदीदा छात्र बन गए और जब वे वकील बने तो हमेशा इमानदार रहे.

"एक बार उन्हें स्कूल में आमंत्रित किया गया, जहां उन्होंने बच्चों से बात की. कक्षा में बच्चे तरहतरह के सवाल पूछ रहे थे. सब खूब मजे कर रहे थे. गांधीजी ने देखा कि क्लास में एक छात्र उदास बैठा है. वे उठ कर तुरंत उस के पास गए और उस से सूरजचांद के बारे में ऊलजलूल सवाल पूछने लगे. वह छात्र इन सवालों का जवाब जानता था और उस ने जवाब भी दिए. जवाब सुन कर गांधीजी ने उस की प्रशंसा की. इस चमत्कार से वह छात्र सतर्क हो गया और उस का उत्साह बढ़ गया तथा उदासी दूर हो गई.

"यह देख कर गांधीजी के पास खड़े प्राचार्य हैरान रह गए और इस का रहस्य पूछा. गांधीजी ने कहा कि कभीकभी किसी की प्रशंसा करने का उद्देश्य उस की कमियों को नजरअंदाज करना होता है. प्रशंसा किए जाने का एहसास ही खुश होने जैसा होता है. प्रसन्नता मन को उत्साहित करती है. जब हम

मुसकराते हैं तब ऐसा ही होता है. इस तरह खुशी एक से दूसरे के पास पहुंचती है और दुख दूर हो जाता है.

''वाह मां, यह एक अच्छी कहानी है.''

''हां जौली, एक और बात है. वे सब को समान भाव से देखते थे. दुनिया में कोई भी छोटाबड़ा नहीं है.

''एक बार स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान युवा स्वयं सेवकों के साथ गांधीजी गांवगांव जा रहे थे और लोगों से क्रांति में शामिल होने का अनुरोध कर रहे थे. एक जगह वे रास्ता पूछने लगे. किसान गांधीजी का हंसमुख, सरल और नेक व्यवहार से उत्साहित हो कर उन को सही रास्ता बताने लगा. जब गांधीजी ने उन्हें धन्यवाद दिया, तो उस ने उन्हें मटके में रखा ठंडा पानी पिलाया और दूर तक उन्हें टाटा, बायबाय करता रहा. अब सही रास्ता मिल गया था. चलतेचलते युवकों ने गांधीजी से पूछा कि आप कितनी याचना कर रहे थे.

यह सुन कर बापू बोले, ''हम किसी भी अनजान से अपना काम निकलवाने उस से कठोर या आदेश वाले वचन कभी नहीं बोलने चाहिए. हमें विनम्र अनुरोध करना चाहिए और अच्छे इंसान की तरह मीठीमीठी बातें करनी चाहिए. हमें खुद का आचरण ठीक करना चाहिए ताकि दूसरा व्यक्ति सम्मानित महसूस करे. उसे लगे कि वह कोई महत्त्वपूर्ण काम करने जा रहा है.

यह बात अनुकरणीय थी. गांधीजी इस महामंत्र को जीवन भर नहीं भूले. ऐसे थे गांधीजी.''

''हां मां, हमारे प्यारे बापू,'' जौली ने कहा और वह अपने दोस्तों को कहानियां सुनाने के लिए दौड़ा. ●

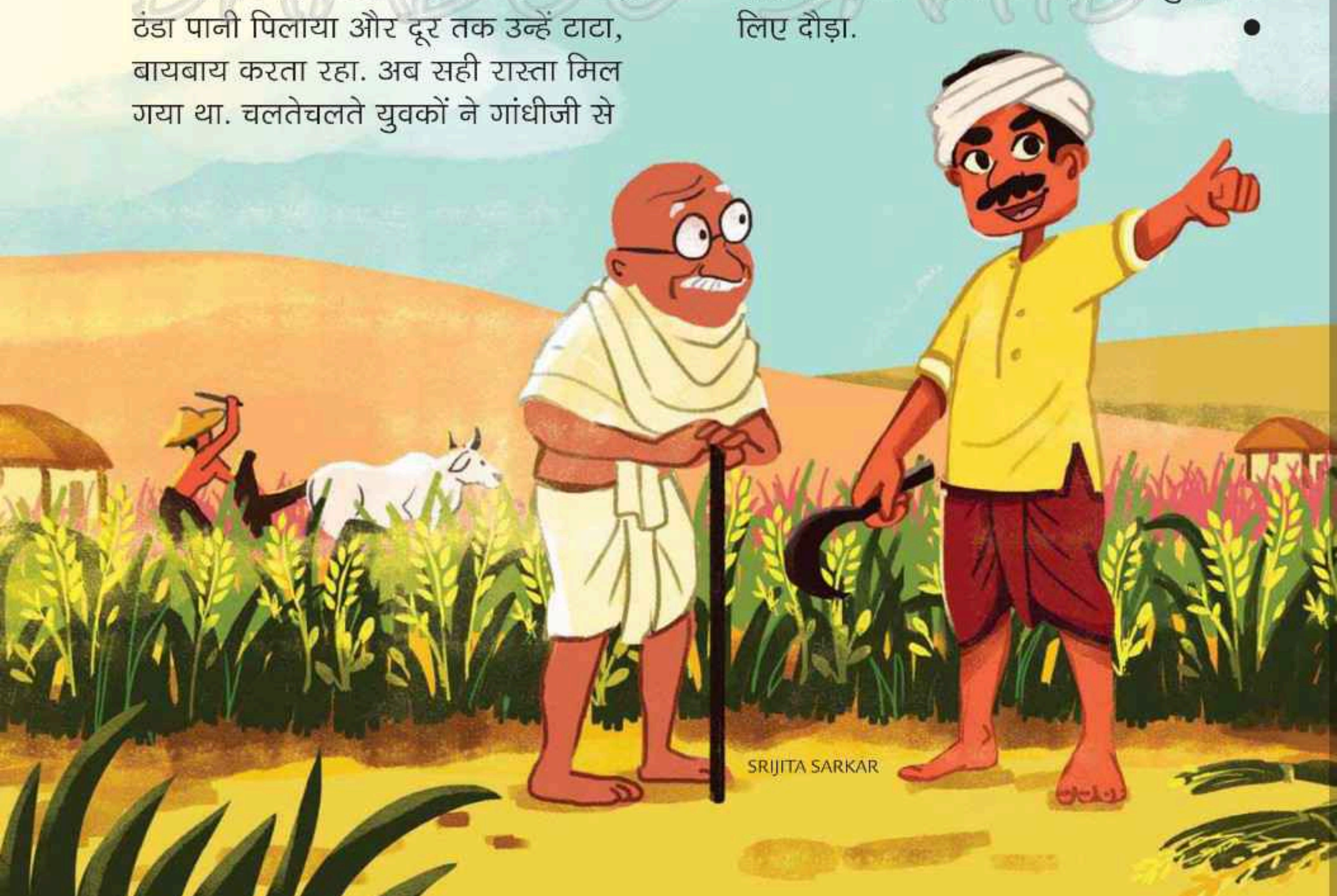

SRIJITA SARKAR

छिपे चित्र ढूंढ़ें

2 अक्तूबर, 1869 को महात्मा गांधी का जन्म हुआ था. उन के जन्मदिन पर हम उन्हें याद करने के लिए 2 अक्तूबर को गांधी जयंती मनाते हैं. उन सभी चीजों को ढूंढ़ें जो अकसर गांधीजी से संबंधित रही हैं.

उत्तर अंतिम पृष्ठ पर देखें.

बूढ़े आदमी का घोड़ा

कहानी • रईस सिद्दीकी

अरब के एक छोटे से गांव में एक बूढ़ा आदमी रहता था. वह बहुत ही धर्मपरायण यानी भक्ति में डूबा रहने वाला व्यक्ति था. उस के पास एक घोड़ा था, जो बहुत ही सुंदर, तेज गति वाला और तंदुरुस्त था. वह उसे बहुत ही ज्यादा पसंद करता था, उस का हर तरह से खयाल रखता था. वह घोड़ा उसे अपनी जिंदगी से भी प्यारा था. वह उसे स्वस्थ भोजन खिलाता और खुद के लिए भी भोजन अपनी झोंपड़ी में ले जाता तथा उसे भी उस घोड़े को खिलाता था. वह अपने घोड़े पर बैठ कर गांव में

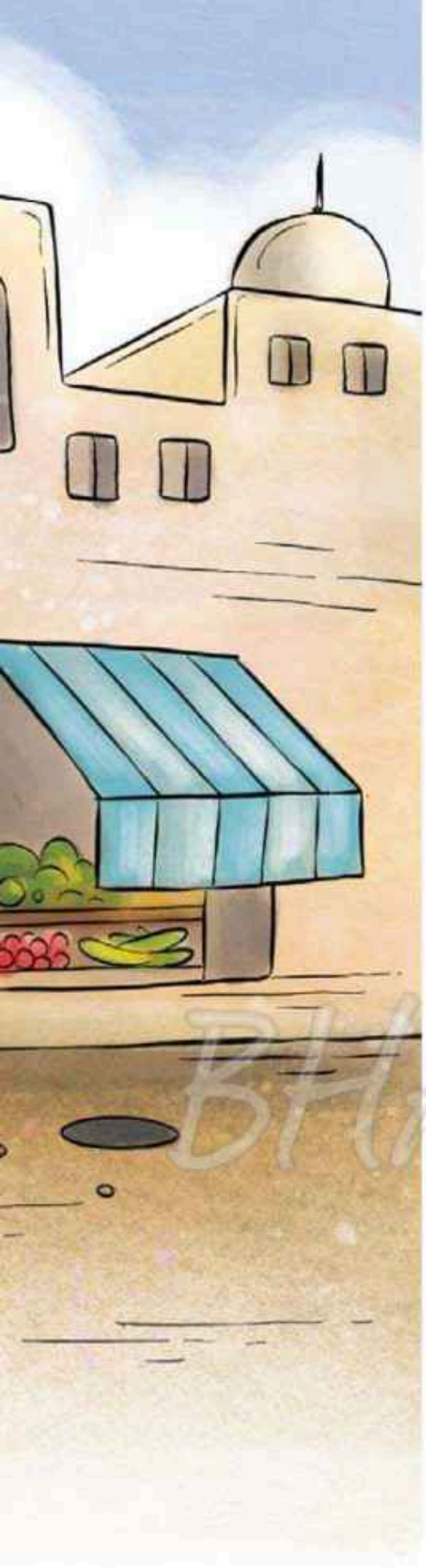

चारों ओर घूमा करता था.

घोड़े की चर्चा आसपास के गांव, कसबों, शहरों और नगरों में फैल गई. कुछ लोग तो किसी भी कीमत पर घोड़े को खरीदना चाह रहे थे, लेकिन वह बूढ़ा आदमी किसी भी कीमत पर अपने घोड़े को नहीं बेचना चाहता था.

एक दिन अरब के एक बड़े शहर से एक अमीर व्यापारी ने घोड़े के गुणों को सुन कर उसे खरीदने उस के गांव आया. उस ने मुंहमांगी कीमत देने का औफर दिया, लेकिन बूढ़े आदमी ने घोड़े को बेचने से साफ मना कर दिया.

व्यापारी बहुत अनुभवी आदमी था. उस ने दुनिया देखी थी. उसे यह विश्वास हो गया था कि वह घोड़े को सिर्फ रुपयों से नहीं खरीद सकेगा.

वह निराश हो गया, लेकिन जिस समय उसे विदा किया गया उस ने आत्मविश्वास से कहा, ''जो कुछ भी मैं चाहता हूं, किसी भी तरह से उसे हासिल कर ही लेता हूं.''

जैसेजैसे समय बीतता गया, बूढ़ा आदमी व्यापारी के बारे में और अपने अंतिम कथन के संबंध में सबकुछ भूल गया.

एक दिन बूढ़े आदमी को अपने किसी काम के लिए शहर जाना पड़ गया. रास्ते में वह एक जंगल से गुजर रहा था, तो उस ने एकदूसरे बूढ़े आदमी को देखा. वह बूढ़ा आदमी एक संकरे रास्ते पर बहुत मुश्किल से धीरेधीरे रेंगते हुए चल रहा था. उस का चेहरा ढका हुआ था और उस ने फटेपुराने कपड़े पहने हुए थे.

वह बीमार भी दिखाई दे रहा था. उस ने बहुत ही विनम्रता से अपनी चिंता उस घुड़सवार बूढ़े आदमी को विस्तार से बताई और कहा कि उस के लक्ष्य तक पहुंचाने में उस की मदद करें.

घुड़सवार बूढ़ा आदमी बहुत ही नरम दिल था. वह बहुत दयालु और करुणा से भर गया. उसे बीमार आदमी पर बहुत दुख का एहसास हुआ. उस ने अपने घोड़े की पीठ पर चढ़ने में मदद की.

जैसे ही वह बूढ़ा आदमी घोड़े की पीठ पर बैठा, उस ने अपने चेहरे से कपड़े को हटाया और कहा, ''मैं ने तुम्हें बताया था कि जो कुछ भी मुझे पसंद आ जाता है, मैं उसे किसी भी कीमत पर हासिल करना चाहता हूं, मैं वही व्यापारी हूं, जिसे तुम ने घोड़ा बेचने से मना कर दिया था. वह मेरा कौशल और बुद्धिमत्ता है कि तुम ने स्वयं ही अपने घोड़े की लगाम और मालिकाना हक मुझे सौंप दिया है.''

घोड़े का वह दयालु मालिक उम्मीद से परे इस तरह के हालत से हक्काबक्का रह गया. उस ने कभी इस तरह की दुर्भाग्यपूर्ण घटना के घटित होने की कल्पना भी नहीं की थी और न ही कभी सोचा था कि ऐसा भी हो सकता था. उस ने खुले आसमान की ओर देखा, उस के बाद गहरी सांस ले कर आगे बढ़ा और बोला, ''अब यह घोड़ा तुम्हारा हो गया है. मैं तुम से यह नहीं कहूंगा कि तुम मुझे इसे वापस कर दो. अपनी जान से भी प्यारे इस घोड़े

को मैं ने तुम्हें खुशी से दे दिया, लेकिन मैं तुम से से विनती करता हूं कि अगर तुम से कोई इस घोड़े के बारे में कुछ पूछना चाहे, तो उसे यही बताना कि मैं ने तुम्हें यह घोड़ा अपनी खुशी से गिफ्ट में दे दिया है.''

उस धोखेबाज व्यापारी ने कहा, ''मैं ऐसा क्यों कहूं? इसे तो मैं ने अपनी चालाकी और बुद्धिमानी से तुम से हासिल किया है.''

यह सुन कर घोड़े के असली मालिक यानी उस बूढ़े आदमी ने अत्यंत गंभीर स्वर में यह बात विस्तार से बताई, ''अगर तुम ने किसी को यह बात बताई कि एक बीमार और जरूरतमंद आदमी का वेश बना कर मुझे बेवकूफ बना कर घोड़े को हासिल किया है तो कोई भी आदमी कभी भी किसी जरूरतमंद या सचमुच में मुसीबत में पड़े व्यक्ति पर विश्वास नहीं करेगा और उस की मदद भी नहीं करेगा.

''लोग कभी भी किसी जरूरतमंद या परेशानी में पड़े व्यक्ति पर भरोसा नहीं करेंगे, जैसा तुम ने मेरे साथ किया. समाज हरेक जरूरतमंद व्यक्ति को शक की नजर से देखेगा,'' बूढ़े आदमी ने कहा और फिर से आगे कहने के लिए थोड़ा रुका.

''कोई किसी का भला नहीं करेगा. कोई किसी की मदद नहीं करेगा. किसी पर हमदर्दी नहीं दिखाएगा, कोई किसी के लिए काम करने के लिए नहीं सोचेगा.''

''लोगों का दया और अच्छाई से भरोसा खत्म हो जाएगा, साथ ही लोग किसी के लिए दुख या सहनशीलता व सहानुभूति या किसी के लिए मदद करने की बात सोचेगा,'' उस ने उस की व्यापारी की ओर देखा जिस ने उस का घोड़े पर कब्जा कर लिया था. ●

BHADOO SAHIB

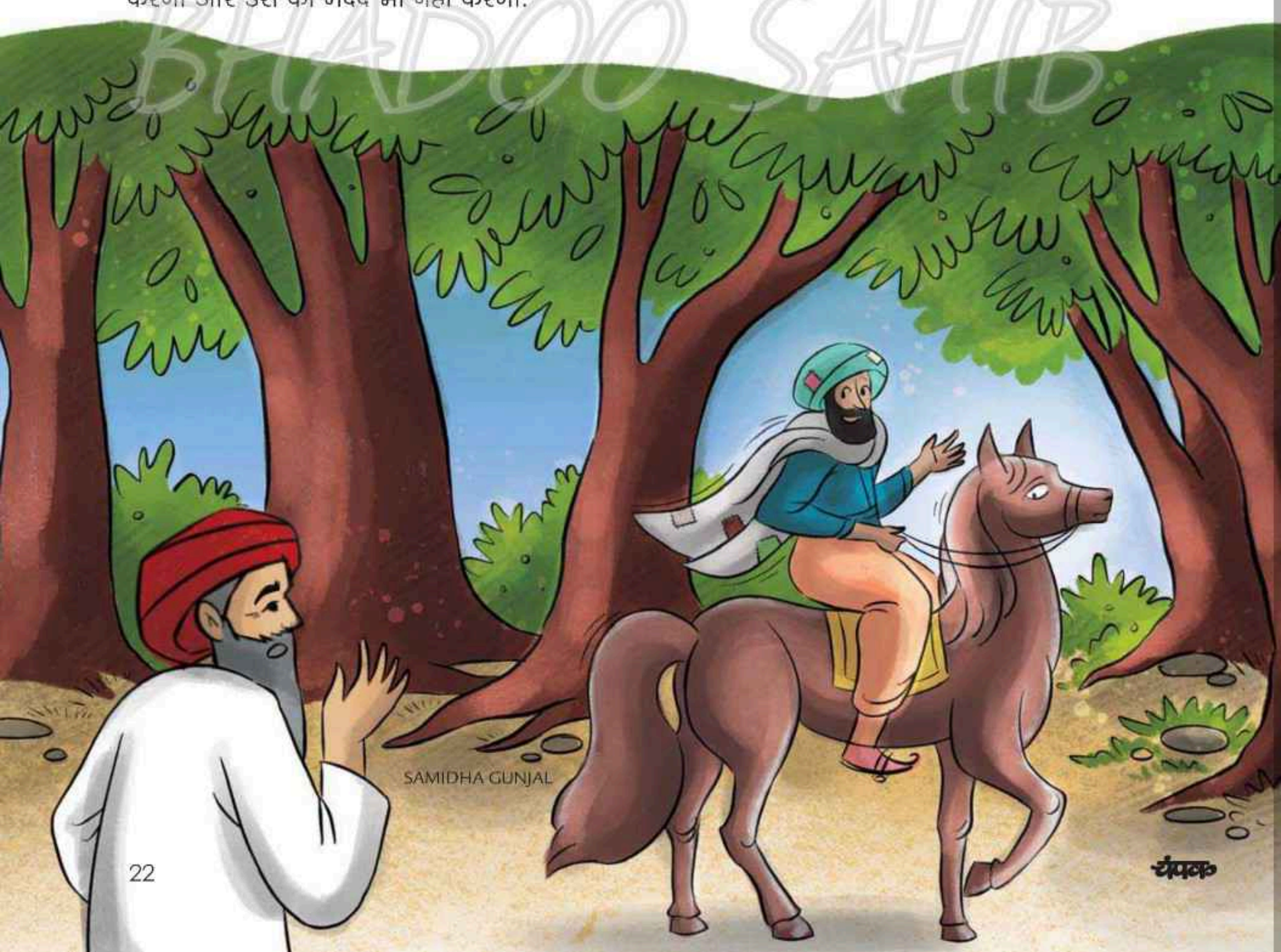

मिलान करें

विश्व प्राकृतिक आवास दिवस 3 अक्तूबर को मनाया जाता है. नीचे कुछ जानवर हैं, उन के निवास स्थान भी दिए गए हैं. उन का सही मिलान करें.

1

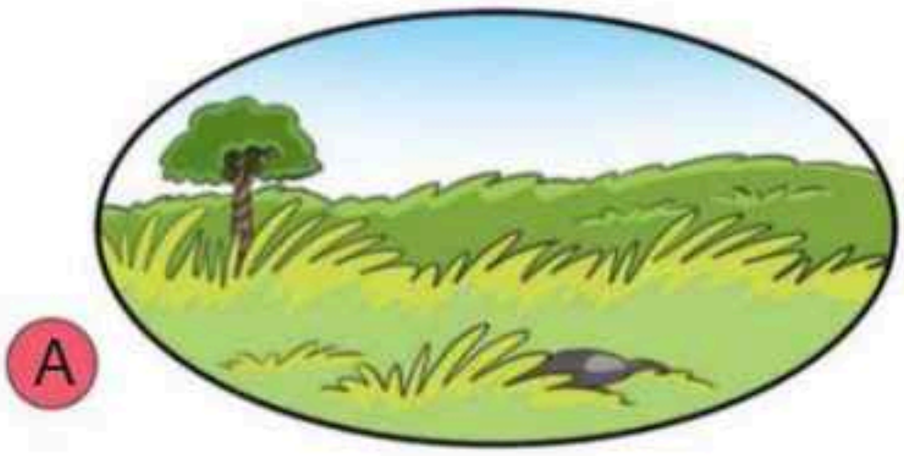

A

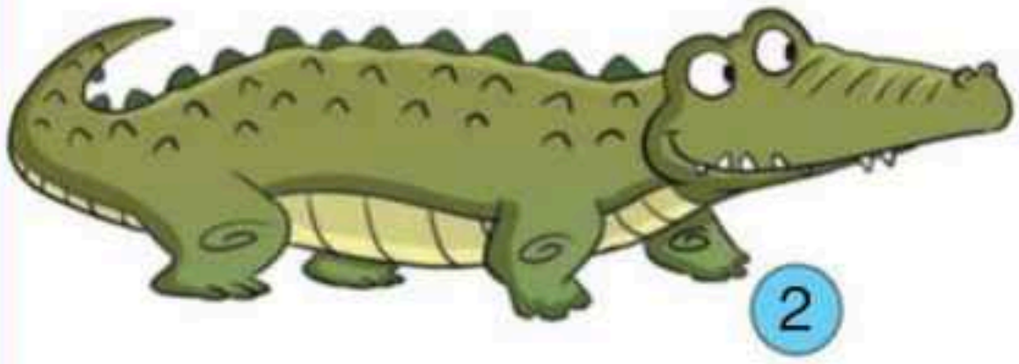

2

B

3

C

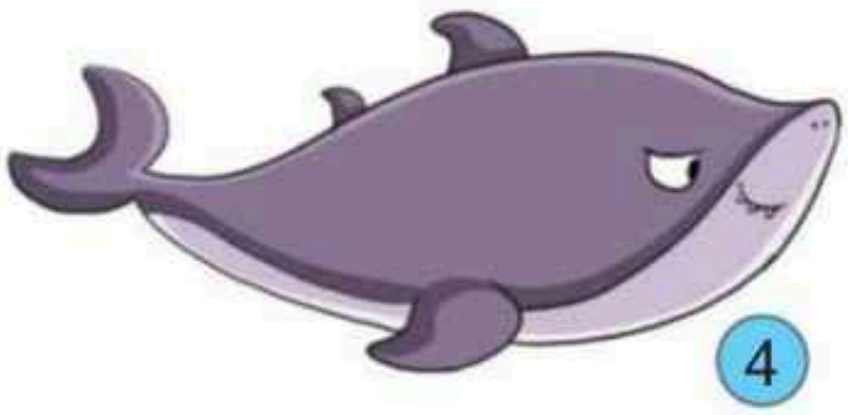

4

D

5

E

उत्तर अंतिम पृष्ठ पर देखें.

पत्तों में छेद

कहानी • ललित शौर्य

ओजस बगीचे में बैठा था. उसे शरारत सूझ रही थी. वह कभी पेड़ों की डालों में झूलता तो कभी तितलियों के पीछे भागता. उसे यह सब करने में बहुत मजा आ रहा था. ओजस बगीचे में अपने दादाजी के साथ था, जो बगीचे में रखे गमलों में पौधों को पानी दे रहा था.

ओजस खेलतेखेलते पेड़ से कुछ पत्तियां तोड़ लाया और उन में नुकीली लकड़ी से छेद करने लगा. उस ने पत्तियों को बिलकुल छलनी कर दिया था. उस के सामने पत्तियों का ढेर लग चुका था. दादाजी ने जब यह सब देखा तो उन्हें बहुत बुरा लगा. उन्होंने पूछा, ''अरे, ओजस, यह सब क्या कर रहे हो. तुम ने इतनी पत्तियां क्यों तोड़ लीं. अब इन में छेद कर के क्या कर रहे हो?''

ओजस हैरान रह गया और उस ने धीरे से कहा, ''कुछ नहीं दादाजी, मैं तो खेल रहा हूं.''

''यह कैसा खेल है? क्या तुम पेड़ों को भूखा रखना चाहते हो?'' उस के दादाजी ने पूछा.

''मैं समझा नहीं. भला मेरे खेल खेलने से पेड़ कैसे भूखे रहेंगे?'' ओजस ने हैरानी से पूछा.

''तुम्हें इतना भी नहीं मालूम कि पेड़ सूर्य की रोशनी में अपनी पत्तियों के सहारे ही भोजन का निर्माण करते हैं. अगर तुम उन की पत्तियां ही तोड़ दोगे तो वे बेचारे भूखे ही मरेंगे ना,'' दादाजी ने समझाया.

ओजस को यह सुन कर बड़ी हैरानी हुई, क्योंकि उसे यह बात पता ही नहीं थी. वह बोला, ''यह बात तो मुझे आज ही पता चल रही है.''

''हां, यह सच है बेटा. तुम पत्तियों में छेद क्यों कर रहे हो? पत्तियों में पहले से ही ढेर सारे छिद्र होते हैं,'' दादाजी ने समझाते हुए कहा.

ओजस ने एक पत्ती को हाथ में उठा कर उलटतेपलटते देखा और कहा, ''दादाजी, इस में तो कोई छेद ही नहीं है. आप झूठ बोल रहे हैं.''

''हा हा हा, बेटा, मैं तुम से सच बोल रहा हूं. पत्तियों में छेद तो होते हैं, लेकिन ये पत्तियों के उलटे भाग में होते हैं,'' दादाजी ने अपनी बात पर जोर देते हुए कहा.

''अच्छा, यदि ऐसा है तो हमें

दिखाई क्यों नहीं देता,'' ओजस ने पूछा.

''क्योंकि वे बहुत छोटेछोटे होते हैं. हम उन्हें नंगी आंखों से नहीं देख सकते, पर मैं इसे साबित कर सकता हूं. तुम घर से वैसलीन की डब्बी ले आओ,'' दादाजी ने कहा.

ओजस को पत्तियों के छिद्र देखने की उत्सुकता थी, इसलिए वह दौड़ कर गया और वैसलीन की डब्बी ले आया. उस ने उसे दादाजी को देते हुए कहा, ''दादाजी, अब दिखाओ छेद.''

''चलो, आज हम एक प्रयोग करते हैं,'' दादाजी ने कहा.

''कैसा प्रयोग दादाजी?'' ओजस ने पूछा.

दादाजी ओजस को गमलों के पास ले गए और बोले, ''यह देखो, गमलों में ये जो पौधे लगे हैं, इन में ही हमें प्रयोग करना होगा. एक गमले के पौधे की पत्तियों में केवल ऊपरी सतह पर वैसलीन लगानी है और दूसरे गमले की पत्तियों में नीचे की सतह पर.''

दादाजी और ओजस पत्तियों में वैसलीन लगाने लगे.

''इस से क्या होगा दादाजी?'' ओजस ने जिज्ञासा के साथ पूछा.

''ऐसा करने से तुम्हें पता चल जाएगा कि पत्तियों में छेद होते हैं. जिस गमले के पौधे की पत्तियों में हम ने नीचे की ओर वैसलीन लगाई. कुछ दिन बाद वह मुरझा जाएगा और जिस में ऊपर की ओर वैसलीन लगी है वह स्वस्थ रहेगा,'' दादाजी ने बताया.

''अरे, यह तो जादू हो जाएगा. ऐसा कैसे संभव है,'' ओजस ने पूछा.

''पत्तियों के ऊपरी भाग में छेद नहीं होते. इसीलिए जिस पौधे की पत्तियों के ऊपरी भाग में वैसलीन लगी होती है वे जीवित रहती हैं. वहीं दूसरी ओर पौधे की पत्तियों के निचले भाग में वैसलीन लगने से उस पौधे की पत्तियों के छेद बंद हो जाते हैं, वह हवा से कार्बन डाइऔक्साइड नहीं ले पाता और अपना भोजन भी नहीं बना पाता,'' दादाजी ने विस्तार से बताया.

''यह तो सच में कमाल है. पौधों की पत्तियों में पहले से ही इतने छेद होते हैं. मैं बेकार की मेहनत कर रहा था,'' ओजस ने हंसते हुए कहा.

ओजस की बातों को सुन कर दादाजी भी ठहाके मार कर हंसते लगे.

एक हफ्ते बाद दादाजी और ओजस बगीचे में आए. उन्होंने देखा कि एक गमले का पौधा स्वस्थ है, जबकि दूसरे गमले का पौधा मुरझा या सूख चुका है. अब ओजस को दादाजी की बातों पर पूरा विश्वास हो चुका था. ●

BHADOO SAHIB

चीकू

चित्रकथा : दास

चंपकवन में साफसफाई का अभियान चलाया जा रहा था.

मुझे उम्मीद है कि जब मैं सफाई कर रहा था, तुम ने रिकौर्ड कर लिया होगा.

हां, सर.

इसे सारे चैनलों पर प्रसारित कर दो. अब मैं चलूंगा, बच्चो, तुम सफाई कार्य करो.

मंत्री चला गया.

अगर हमें ही सारी सफाई करनी थी तो मंत्री फिर यहां क्यों आया था?

उसे अपने प्रयासों के लिए प्रशंसा चाहिए थी. उसे भूल जाओ. चलो, काम पूरा करते हैं.

चीकू और मीकू सफाई करने में लगे थे तभी झाड़ियों के पीछे से सियार आया.

मैं इन दोनों को खा जाऊंगा.

चीकू ने सियार को देख लिया.

मीकू, सियार है, भागो.

भाग कर कहां जाओगे?

जब चीकू और मीकू भाग रहे थे तो फिसल कर वे एक पोखर यानी गड्ढे में गिर गए.

आ...आ... ह...

सियार ने दोनों को पकड़ लिया.

अब मुझे इन दोनों को धो लेना चाहिए.

हमें जाने दो. फिर देखना तुम्हारे साथ हम क्या करते हैं?

हमें अगर एक मौका मिल जाए, तो हम तुम्हें एक सबक सिखाएंगे.

हा, हा, हा, इस चूजे की ताकत तो देखो, इसे मैं सब से पहले खाऊंगा.

वहां पर एक झील है. उसी में इन्हें धो लेता हूं.

एक हाथी झील में नहा रहा था.

सियार ने चीकू और मीकू को पकड़ कर रखा. यही एक मौका है इसे सबक सिखाया जाए.

हाथी ने अपनी सूंड़ में पानी भरा और सियार पर फुहारा मार दी.

ओह, यह तो बारिश होने लगी.

हाथी ने सियार को पकड़ लिया.

तुम मेरे दोस्तों को परेशान क्यों कर रहे हो?

कृपया मुझे छोड़ दो. मुझे माफ कर दो.

हम तुम्हें तभी माफ करेंगे जब तुम पूरे दिन इस स्थान की साफसफाई करने में बिताओगे.

ठीक है, हां, हां. मैं सारी सफाई कर दूंगा. कृपया कुछ फोटो भी खींच लो.

क्यों? क्या तुम साथ ही साथ मंत्री भी बनना चाहते हो?

बिंदु मिलाओ

अंकों के अनुसार बिंदुओं को
मिलाएं और चित्र को पूरा करें.

BHADOO SAHIB

रास्ता बताओ

5 अक्तूबर को दशहरा मनाया जा रहा है. रियाज और उस के दोस्त कम्युनिटी ग्राउंड की ओर जाने वाले रास्ते पर बढ़ रहे हैं, जहां उन के पड़ोसी इस त्योहार को रावण का पुतला जला कर मनाने जा रहे हैं, लेकिन वे रास्ता भटक गए हैं. आप उन की सहायता कीजिए.

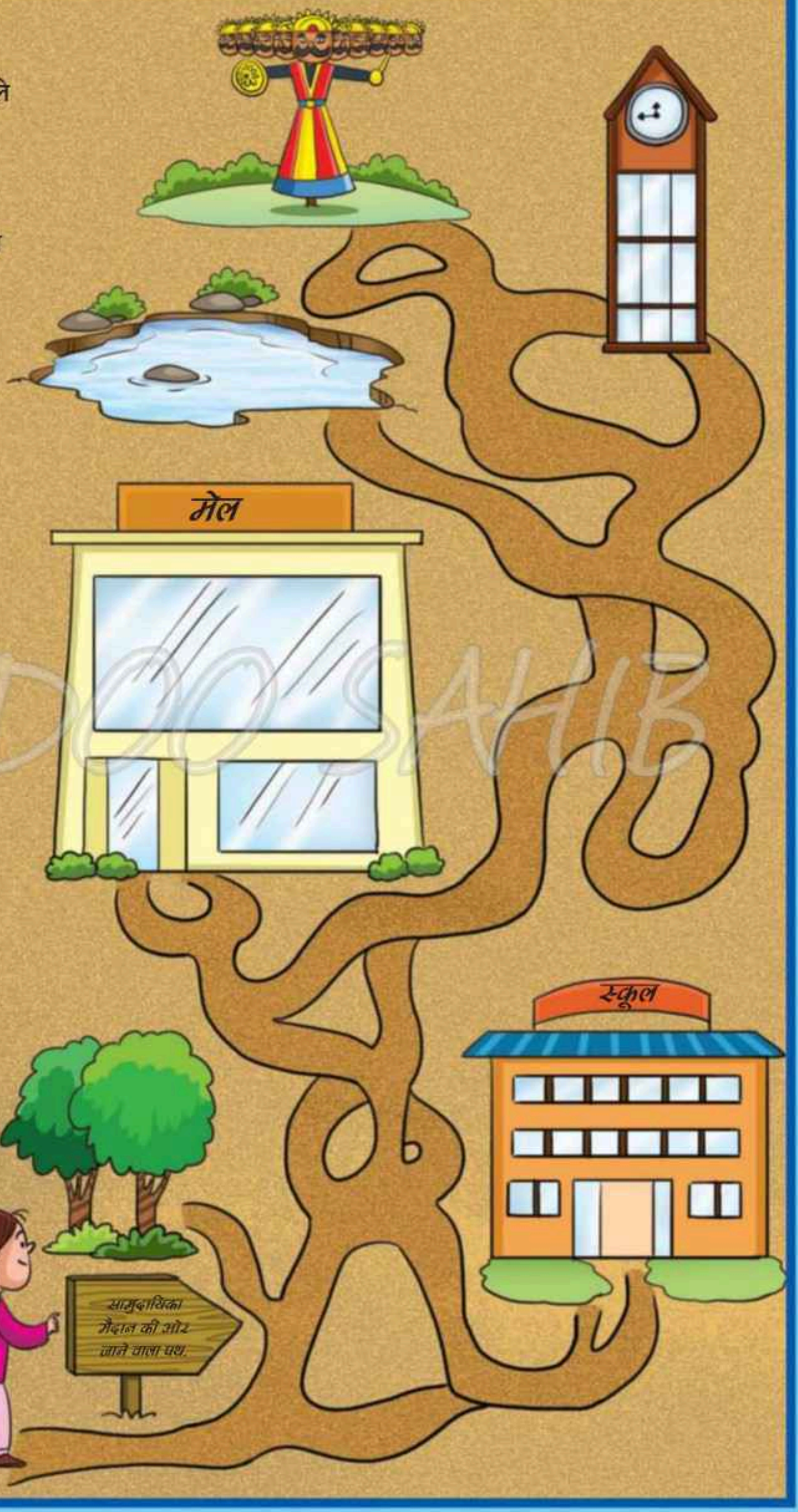

उत्तर अंतिम पृष्ठ पर देखें.

सूझबूझ से जीत

कहानी ● ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

लतिका अपने मामा के यहां से लौटी. वह अपनी बहन की शादी में शामिल होने गई थी. जब वह बाहर थी तब उस के विद्यालय में वार्षिक खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई थी.

जैसे ही लतिका स्कूल पहुंची वैसे ही रिया ने मायूस हो कर कहा, ''हमारी टीम कबड्डी और खोखो के मैच हार गई.''

''लेकिन क्यों?'' लतिका ने पूछा. फिर उस ने अपनी टीम के सदस्यों की तरफ देखा, जिन में से अधिकांश कैप्टन मीना की सहेलियां थीं.

''मुझे पता नहीं,'' रिया ने कहा, ''लगता है कुछ खिलाड़ी कमजोर थे.''

''सही कहा,'' लतिका ने उस का समर्थन किया, ''मीना कैप्टन थी. और उन्हें ऐसे खिलाड़ी चुनने चाहिए थे, जो उस खेल को अच्छा खेल सकें,'' यह कहते हुए लतिका मीना के पास गई.

''लतिका, अभी एक मैच और बाकी है. इस में हमारी जीत होनी चाहिए,'' कहते हुए मीना ने लतिका को सारी बातें बता दीं.

लतिका के लिए यह एक चुनौती थी, क्योंकि उस की टीम को जीतना था. उन्हें एक योजना की जरूरत थी, क्योंकि विरोधी टीम कई गेम जीत चुकी थी और अति आत्मविश्वास में थी.

लतिका ने अपने साथियों को संबोधित करते हुए कहा, ''साथियो, जीत हमेशा आत्मविश्वास से नहीं होती है. एक योजना होनी चाहिए. यह फाइनल मैच होगा, इसलिए हमें इसे हर हाल में जीतना होगा.''

यह सुन कर टीम में उत्साह का संचार हो गया. सब एकसाथ बोले, ''हां, हम जीत कर दिखाएंगे. एक

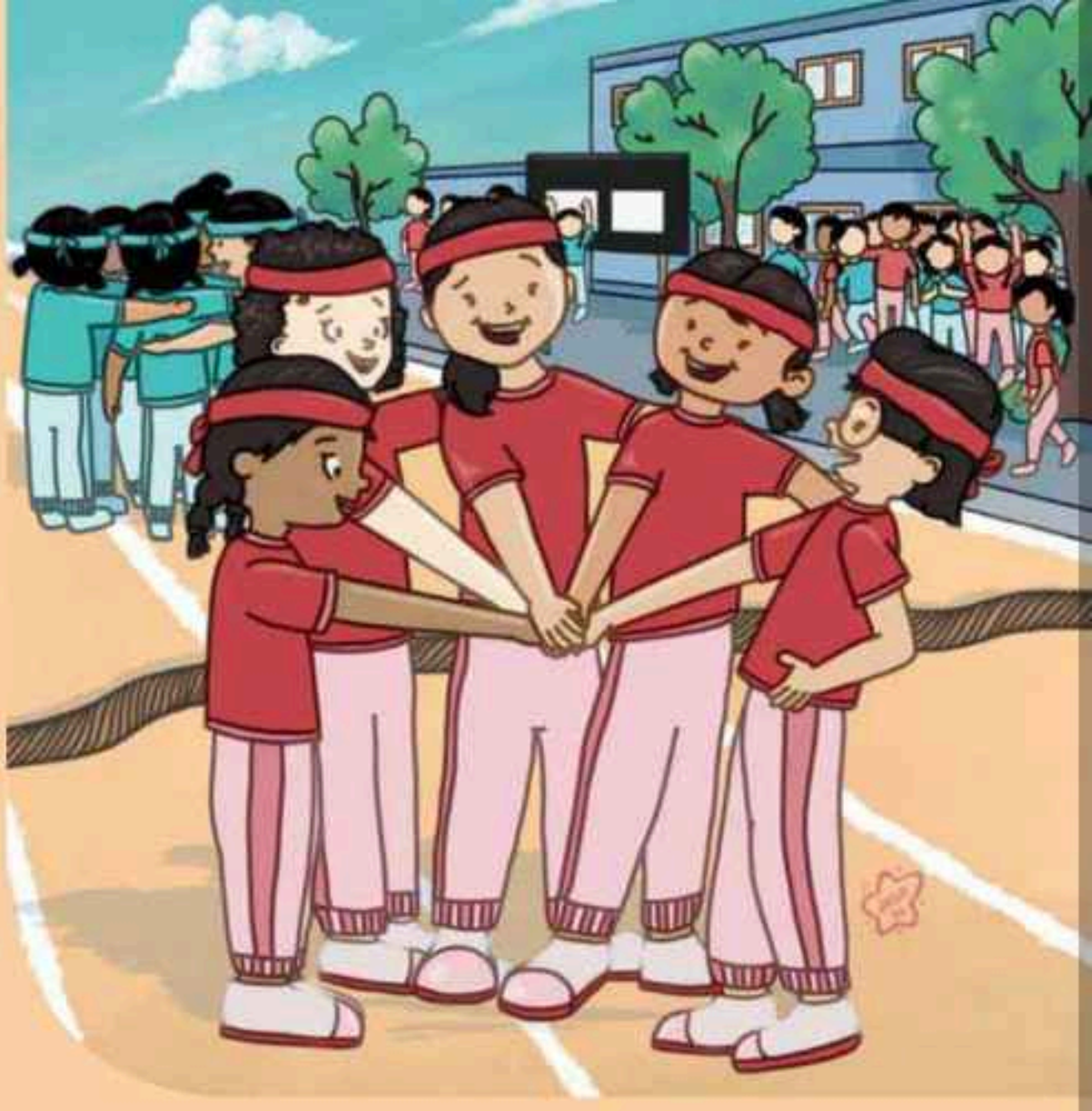

बार तुम योजना बताओ. हम उसी के अनुसार काम करेंगे.''

''ठीक है. तुम मेरी बात ध्यान से सुनो,'' कहते हुए लतिका ने अपनी टीम को वह योजना बताई. उन्हें भी वह योजना अच्छी लगी.

उस की योजना के अनुसार लतिका की टीम मैदान में उतरी. विरोधी टीम देवांशी की थी. रस्साकशी मैच के लिए एक लंबी मोटी रस्सी जमीन पर पड़ी थी, जिस में दोनों टीमों को ताकत लगा कर रस्सी खींचनी थी, जो रस्सी खींच कर दूसरी टीम को अपने पाले में ले आएगा, जीत उसी की होगी.

निर्धारित समय पर खेल शुरू हुआ.

देवांशी ने अपनी टीम का हौसला बढ़ाया, ''जोर लगा के...''

''हौइसा,'' टीम के सभी सदस्यों के एकसाथ चिल्ला कर कहा और पूरी ताकत से रस्सी खींचने लगे.

इधर लतिका भी जोर से चिल्लाई, ''जोर लगा के...''

''हौइसा,'' लतिका की टीम के सदस्य भी चिल्ला कर जोर लगाने लगे.

यह सुनते ही देवांशी ने अपनी टीम को जोश दिलाया, ''जोर लगा कर.''

''हौइसा,'' जैसे ही उस की टीम ने कहा, वैसे ही लतिका की टीम ने रस्सी छोड़ दी और देवांशी की टीम जमीन पर गिर गई. रेफरी ने देवांशी की टीम को पैनल्टी के 2 अंक दे दिए.

यह देख कर देवांशी की टीम खुश हो गई.

इधर लतिका ने अपनी टीम को फटकार लगाई, ''तुम क्या कर रहे हो? विरोधी टीम को 2 अंक मिल गए हैं. हम हार सकते हैं.''

देवांशी की टीम 2 अंक से आगे चल रही थी.

दोनों टीमों ने फिर से रस्सी पकड़ी और जोर से खींची. देवांशी और लतिका दोनों ने अपनीअपनी टीम का हौसला बढ़ाया.

जोशीली देवांशी की टीम ने रस्सी खींचने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी. लतिका की टीम ने फिर रस्सी छोड़ दी और देवांशी की टीम दोबारा जमीन पर गिर गई.

रेफरी ने लतिका को चेतावनी दी, ''इस तरह यदि आप की टीम तीसरी बार भी यही गलती करती है तो तुम्हारी टीम के पैनल्टी के तौर पर तीन अंक काट दिए जाएंगे.''

इस पर लतिका बोली, ''क्षमा करें सर, ऐसा आइंदा नहीं होगा.''

लतिका हमेशा अपनी योजना बनाती थी, जबकि देवांशी की टीम को पहले ही 4 और 1 अतिरिक्त पैनल्टी पौइंट के साथ कुल 5 अंक मिल चुके थे. इस कारण देवांशी की टीम की जीत सुनिश्चित थी, जबकि लतिका की टीम हार रही थी.

''साथियो जोर लगा कर,'' लतिका चिल्लाई.

उसी जोश में उस की टीम ने कहा, ''हाइसा,'' फिर सब ने पूरी ताकत लगा दी.

देवांशी की टीम दो बार जमीन पर गिर चुकी थी, क्योंकि लतिका की टीम दो बार रस्सी छोड़ चुकी थी.

वह जानती थी कि तीसरी बार भी वह रस्सी छोड़ दे तो वह जीत सकती है. इस कारण देवांशी की टीम लापरवाह हो गई थी.

लतिका की टीम ने जम कर ताकत लगाई. लतिका ने जोश दिलाया और जोर से चिल्लाई. उस की टीम ने जोश में प्रत्युत्तर दिया. फिर झटके के साथ रस्सी खींची.

देवांशी की टीम इस के लिए तैयार नहीं थी. उसे तो किसी तरह 2 मिनट तक लतिका की टीम को रोके रखना था ताकि वह आसानी से जीत जाए, लेकिन हुआ उल्टा.

लतिका की टीम ने झटके से देवांशी की टीम को अपनी तरफ खींच लिया. इस तरह 2 मिनट के अंतराल में विजेता का पाला एक झटके में पलट गया. देवांशी की टीम जीततेजीतते हार गई, जबकि लतिका की हारी टीम जीत गई.

लतिका की टीम को एकसाथ 10 अंक मिले थे और उस की टीम 5 अंक से जीत गई.

"वाकई लतिका, तुम ने कमाल कर दिया," कैप्टन मीना ने कहा, "तुम ने अपनी अच्छी योजना से अपनी टीम को जीत दिला दी."

यह सुनते ही देवांशी बोली, "यह तो सरासर चीटिंग है. तुम ने हमें भ्रमित कर के जीत हासिल की है. तुम ने दो बार रस्सी जानबूझ कर छोड़ी और धोखे से हमें खींच लिया."

मीना बोली, "यह धोखा नहीं, बल्कि एक टैक्नीक है. हम ने दिमाग लगाया और मैच जीत गए. यह तो खेल का नियम है. तुम्हें पैनल्टी के अंक भी मिले हैं."

"हां, वह तो है," देवांशी को कहना पड़ा, "भले ही तुम्हारी टीम ने यह खेल जीत लिया हो, लेकिन हम कबड्डी और खोखो मैच जीत कर तुम से आगे हैं."

"ठीक कहा देवांशी," लतिका बोली, "तुम्हारी टीम को बधाई. आखिर तुम ने खेल भावना से खेल कर जीत हासिल की है. हमें भी सूझबूझ से एक खेल जीतना था. सो जीत लिया," यह सुन कर देवांशी भी मुसकरा दी और इस तरह लतिका ने अपनी हारती हुई टीम को जीत दिलाने के लिए बड़ी सूझबूझ से काम लिया. ●

शब्द ढूंढ़ें

हर साल 1 अक्तूबर को विश्व संगीत दिवस मनाया जाता है. रानी की कक्षा एकसाथ मिल कर एक गाना कंपोज कर के इसे मना रही है. उन सभी म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट्स यानी वाद्ययंत्रों को ढूंढें जिन्हें वे बजाने जा रहे हैं.

तं	पिं	बौ	पिं	पिं	लौ	अं	पिं	इं	पिं	ए	पिं	ड
कौ	जा	पिं	गि	टा	र	फिं	सिं	त्र	ढिं	फिं	ठि	ण
तं	इ	बौ	जिं	ब्र	टिं	अं	टिं	इ	टिं	की	बो	र्ड
श्र	लो	इ	श्र	इ	श्र	इ	त्र	आ	पा	ड़	ऊ	ऊ
कु	फो	बौ	त्र	फ्र	ब्र	अं	ब्र	इ	लु	ए	पिं	ड.
बं	न	ज्ञ	श्र	वी	णा	प्र	ट्र	ट्र	पा	अः	लु	चं
श्र	श्र	बौ	श्र	ट्र	प्र	श्र	सी	ड	त्र	ए	तु	झ
कु	त्र	ट्र	त्र	न्न	द	अ	स्र	झां	पा	त्र	पिं	अ
के	वा	य	लि	न	रे	ट्र	रे	झ	सी	अः	तु	का
कु	के	पे	के	त्र	दं	प्र	ट्र	इ	पा	ए	पिं	र्डि
क	क्र	बौ	च	ट्र	पं	अं	त्र	रे	सीं	इ	वे	य
च्र	वे	ल	वे	त्र	फ्र	वे	सीं	रे	तु	पिं	ब	न
चे	सं	बौ	टं	तं	उ	के	लै	ली	पौ	ए	तु	ड
कु	पं	ट्र	दं	त्र	ऐ	अं	चं	छं	पु	अं	ठिं	कं
चे	ज	ड्र	अ	ल	आ	कुं	सौ	इ	पा	ए	पिं	ढ़
चौ	ट्र	म्र	ल	आं	क	आ	अं	बां	दौ	सौ	तु	ढ
कु	झ	स	त्र	जं	अः	छं	जं	सु	छं	अः	पिं	ढ़
रा	टं	बौ	दं	कं	दं	अं	अं	री	पौ	ए	तु	कं
कु	पे	फु	पे	फु	पे	इ	लौ	लौ	कौ	औ	च	ट

जाइलोफोन, गिटार, उकेलैली (गिटार), कीबोर्ड, ड्रम्स, झांझ, बांसुरी, वीणा, अकार्डियन, वायलिन.

उत्तरः अंतिम पृष्ठ पर देखें.

छोटा रावण स्मार्ट

इस दशहरे में आप अपना मजेदार रावण बनाएं.

आप को चाहिए :

भूरा कागज, टैक्स्चर वाला कागज, सुनहरा कागज, लकड़ी की स्टिक, एक बड़ी थर्मोकोल की बौल, 9 छोटी थर्मोकोल की बौल, काली स्कैच पैन, एक्रेलिक रंग, गूगली आंखें, गोंद, कैंची, ब्रश और पैंसिल.

ऐसे बनाएं

1. टैक्स्चर वाला कागज लें, उसे आयताकार टुकड़ों में काट लें. इसे शंकु आकार में मोड़ लें.

2. अब शंकु के नीचे काट दें. शंकु का प्रयोग करते हुए टैक्स्चर पेपर को गोलगोल काट लें.

3. फिर दूसरा शंकु बनाएं, जो पहले वाले से थोड़ा छोटा हो.

4. अब छोटे शंकु में स्टिक डाल दें और स्टिक को चिपका दें.

5. बड़े शंकु का ऊपरी भाग काट दें, ताकि इस के अंदर छोटा शंकु सेट हो जाए.

6. पहले काटे गए गोल कागज को बड़े शंकु के मुंह के पास चिपका दें.

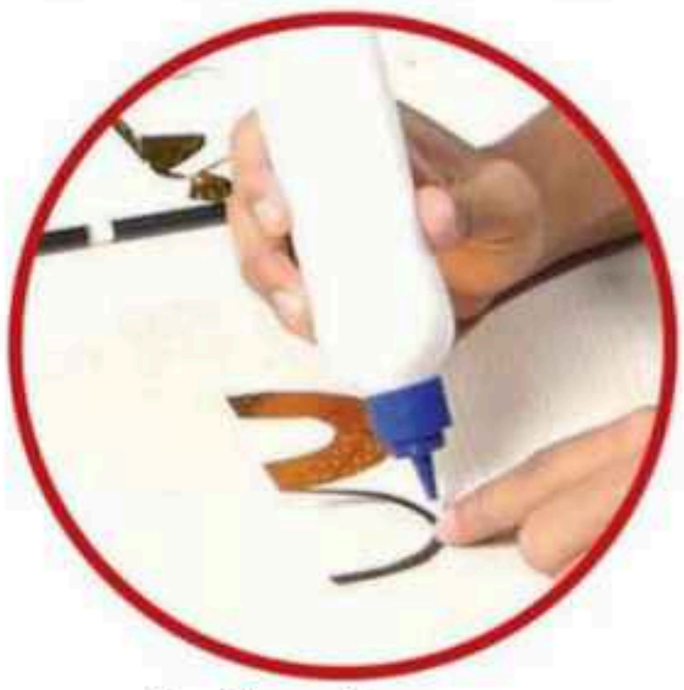

7. सुनहरे और भूरे कागज का उपयोग ज्वैलरी तथा बैल्ट बनाने में करें.

8. शरीर पर ज्वैलरी तथा बैल्ट को चिपका दें.

9. थर्मोकोल की बौल को रंग दें. इस के ऊपर गूगली आंखें चिपका कर भौंहें बना दें.

10. काले कागज को काट कर मूंछें बना लें और सुनहरे कागज से ताज बना लें.

11. थर्मोकोल बौल पर ताज और मूंछें चिपका दें. अब आप का बीच का सिर तैयार हो गया.

12. इसी तरह 9 सिर और बनाएं, जो अलगअलग मुद्राओं में हों.

13. एक स्टिक में सिरों की सिलाई कर दें. सब से बड़ा सिर बीच में होना चाहिए. बड़े सिर के एक ओर 4 सिर होने चाहिए और दूसरी ओर 5 सिर.

14. अब बड़े सिर को शरीर के स्टिक पर चिपका दें.

आप का छोटा रावण दशहरा मनाने के लिए तैयार है.

अपने घर पर इसे स्वयं ही बनाने की कोशिश करें. हमें अपनी प्रविष्टि **writetochampak@delhipress.in** या एक फोटो खींच कर +91 8657402248 पर भेज दें.

चित्र पूरा करें

इस चित्र में कुछ हिस्से खाली रह गए हैं. चित्र को देखें, उन्हें पूरा करें और फिर इन में रंग भरें.

BHADRIPUR SAHIB

सब से अच्छा कौन

कहानी • एस. वरालक्ष्मी

''मैं सब से अच्छी हूं,'' क्लास में टौप रैंक हासिल करने के बाद अपने दोस्तों से दीया ने डींगें हांकी.

हरेक की तरह उस ने भी अभीअभी अपनी टीचर से रिपोर्ट कार्ड लिया था और उस ने एक बार फिर सभी दोस्तों को रिजल्ट में मात दे दी थी.

वह अपना रिपोर्ट कार्ड बड़े गर्व से सभी को दिखा रही थी.

दूसरी ओर संजना ने जैसे ही अपना रिपोर्ट कार्ड देखा, वह सुबकने लगी और उदास हो गई थी.

हमेशा की तरह उस ने औसत अंक ही प्राप्त किए थे.

उस ने जल्दी से अपना रिपोर्ट कार्ड अपने स्कूल बैग के अंदर ठूंस लिया ताकि कोई इसे दिखाने के लिए न कहे.

अचानक उस ने सुना, कोई उसे पुकार रहा था.

''संजना.''

उस ने ऊपर की ओर देखा तो दीया और उस के दोस्त उसे ही देख रहे थे.

डरते हुए उस ने पूछा, ''हां?''

''तुम ने कितने नंबर हासिल किए?'' दीया ने मुसकराते हुए पूछा.

दीया जानती थी कि संजना ने अच्छी रैंक हासिल की थी और वह बस उसे नीचा दिखाना चाहती थी.

''मैं... ऊंह...'' संजना हकलाने लगी थी और नहीं चाहती थी कि कोई उस के मार्क्स के बारे में जान सके.

''हम्म... जान गए, हमेशा की तरह ही हैं, मुझे अंदाजा है, है न,'' दीया और उस के दोस्त ठहाके लगाने लगे.

रोती हुई संजना चाह रही थी, काश, वह गायब हो पाती.

संजना के दोस्तों में से एक दोस्त लोरी उसे बचाने के लिए आई और जोर से चिल्ला कर बोली, ''बधाई हो संजना, कल की रंगोली प्रतियोगिता जीतने के लिए.''

दीया ने ठहाका लगाया और कहा, ''रंगोली प्रतियोगिता में जीत हासिल करने में कौन सी बड़ी बात है? यह तो सिर्फ समय की बरबादी के सिवा कुछ नहीं है. अब मुझे देखो, मैं ने ऐक्सिलैंट नंबर प्राप्त किए हैं, जो एक अच्छे कौलेज में एडमिशन

BHADOO SAHIB

लेने में मेरी मदद करेंगे और बाद में एक अच्छी नौकरी हासिल करने तथा अच्छी सैलरी प्राप्त करने में भी मदद करेंगे. क्या इस से यह साबित नहीं होता है कि मैं सब से बेहतरीन हूं?''

लड़कियां इस बात से अनजान थीं कि टीचर अर्पिता मैम, जो सब को रिपोर्ट कार्ड बांटने में व्यस्त थीं, उन की बातचीत सुन रही थीं.

वह बोलीं, ''ठीक है, बच्चो, मुझे पता है कि आप में से कुछ खुश हो सकते हैं और कुछ दुखी महसूस कर सकते हैं कि आप अपने टेस्ट में कितना अच्छा प्रदर्शन कर सके हो या नहीं कर सके. लेकिन किसी भी निष्कर्ष पर पहुंचने या अपने बारे में निर्णय लेने से पहले यह कहानी सुनो जो मैं आप को सुनाने वाली हूं और उस के बाद ही कोई निर्णय करना.''

हैरानपरेशान सभी सोचने लगे कि वे आखिर क्या करने जा रही थीं.

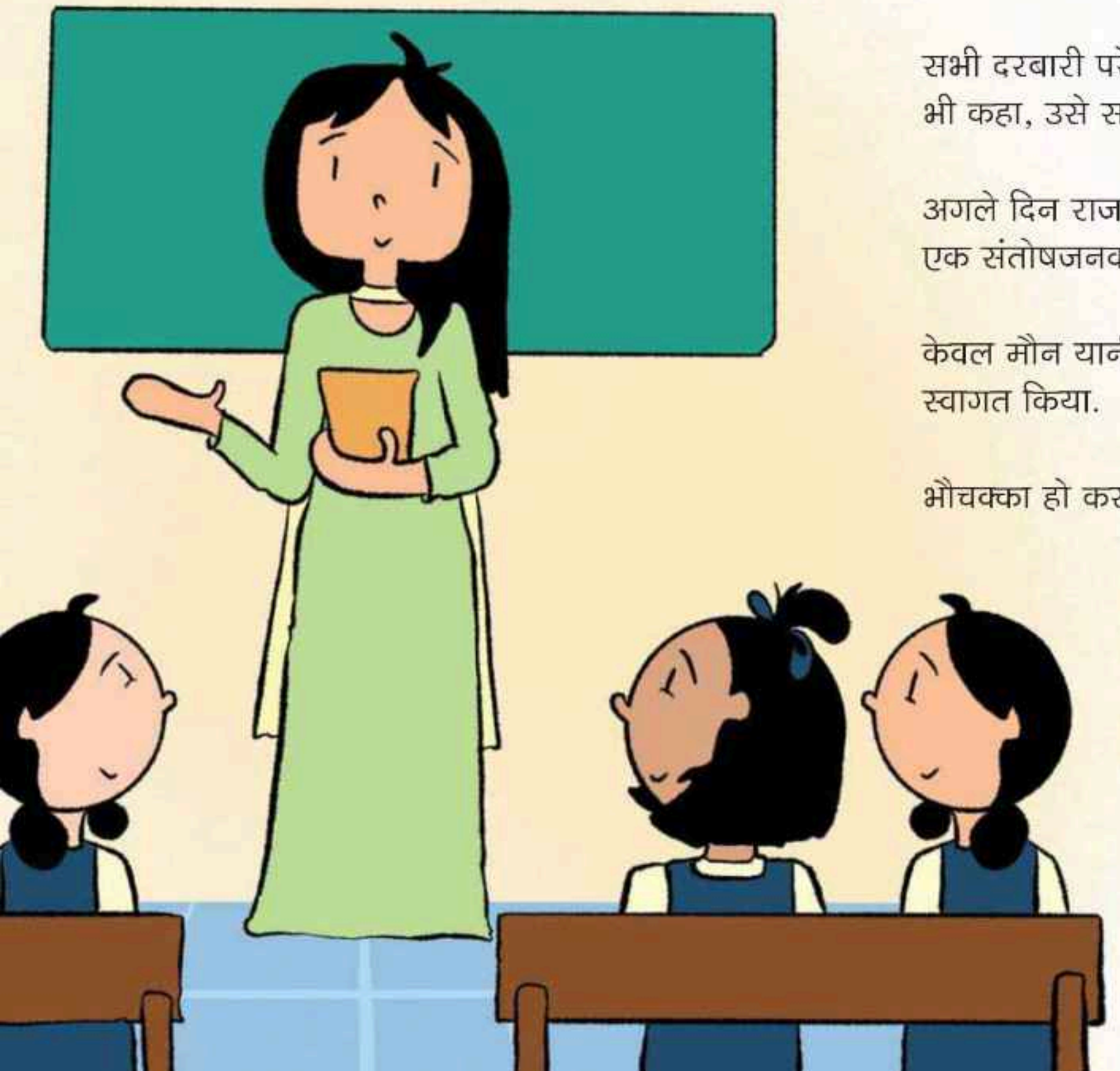

उस के बाद मैडम अर्पिता बताने लगीं, ''विश्वनाथन नाम का एक राजा था जिन्हें डिबेट्स यानी बहसबाजी से बहुत प्रेम था. एक दिन उन की अपने दरबारियों के साथ बहुत ही तीखी बहसबाजी चल रही थी.

राजा ने पूछा, ''दुनिया में बहुत सारे जानवर हैं. क्या कोई मुझे बता सकता है कि सब से बेहतर जानवर कौन सा है?''

एक दरबारी ने कहा, ''इस में कोई शक नहीं, यह शानदार शेर है.''

दूसरे ने कहा, ''यह मोर है.''

एक अन्य ने कहा, ''नहीं, यह हाथी है.''

राजा ने अपना सिर हिलाया और कहा, ''नहीं, मैं आप के उत्तर से संतुष्ट नहीं हूं. तुम जो कुछ भी कह रहे हो, उसे साबित करना होगा और कल तक मुझे इस का उत्तर चाहिए.''

सभी दरबारी परेशान दिखने लगे थे. उन्होंने जो कुछ भी कहा, उसे साबित कैसे करेंगे?

अगले दिन राजा ने कहा, ''उम्मीद है कि आज मुझे एक संतोषजनक उत्तर मिलेगा.''

केवल मौन यानी खामोशी ने वहां पर उन का स्वागत किया.

भौचक्का हो कर राजा ने पूछा, ''हां, तो इस सामान्य से प्रश्न का किसी के पास कोई जवाब नहीं है?''

उन के मंत्री तेजवीर ने जवाब दिया, ''मैं इसे साबित करूंगा, महाराज. कृपया मुझे कुछ लोगों को अंदर लाने की इजाजत दीजिए जो बाहर खड़े इंतजार

कर रहे हैं. वे आप के प्रश्न का उत्तर देंगे.''

राजा ने हां में सिर हिलाया और अपने बाकी दरबारियों के साथ उत्सुकता से लोगों के अंदर आने का इंतजार करने लगे.

अगले ही क्षण 4 लोग अंदर आए. पहला आदमी अपने गधे को ले कर आया. दूसरा कुत्ता, तीसरा घोड़ा और चौथा आदमी गाय ले कर अंदर आया.

पूरे दरबार में सन्नाटा पसर गया. हैरान हो कर राजा ने पूछा, ''यह सब क्या है?'' तेजवीर ने कहा, ''धैर्य रखें, महाराज.''

उस के बाद उस ने चारों आदमियों से पूछा, ''सब से बढ़िया जानवर कौन सा है?'' दरबारियों ने आपस में हंसी उड़ाना शुरू कर दिया. जब वे खुद ही संतोषजनक उत्तर नहीं दे सके थे तो 4 अशिक्षित लोग कैसे उत्तर दे पाएंगे?

पहला आदमी बोला, ''महाराज, मैं समझता हूं कि गधा सब से बढ़िया जानवर है. मैं धोबी हूं और यह मेरी मदद कपड़ों को ढोने में करता है. मेरे लिए तो यही सब से अच्छा है.''

दूसरे आदमी ने जवाब दिया, ''कुत्ता सब से बढ़िया जानवर है, क्योंकि यह मेरे घर की रखवाली करता है. कोई अन्य जानवर मेरे घर की रखवाली नहीं कर सकता है.''

तीसरे आदमी ने कहा, ''घोड़ा सब से बढ़िया जानवर है, क्योंकि मैं एक योद्धा हूं और यह दुश्मनों पर तेजी से हमला करने में मेरी मदद करता है.''

चौथा आदमी बोला, ''गाय सब से अच्छी है. मैं एक दूधवाला हूं और मैं इस के दूध को बेच कर अपना जीवनयापन करता हूं. मेरे लिए गधा, कुत्ता या घोड़ा बढ़िया कैसे से हो सकता है?''

KAVYA KARUNAN

तेजवीर मुड़ा और राजा से बोला, ‘‘आप ने इन्हें सुना, महाराज? इस से यह साबित होता है कि कोई भी जानवर एकदूसरे से बढ़िया नहीं हो सकता है. हरेक की अपनी अलग खासीयत है. यह अपने उद्देश्य की पूर्ति करता है और लोगों द्वारा ही इसे बढ़िया समझा जाता है जो अपने उद्देश्य के लिए इन का चुनाव करते हैं.’’

राजा उत्तर सुन कर काफी खुश हुआ और मंत्री को सोने के सिक्कों से भरा एक बैग इनाम में दिया.

कहानी समाप्त करने के बाद अर्पिता मैडम ने दीया की ओर ध्यान से देखा और कहा, ‘‘मुझे उम्मीद है कि आप सभी ने इस कहानी से कुछ सीखा होगा.’’

‘‘इस कहानी के जानवरों की तरह ही हरेक आदमी अलगअलग क्षेत्र में अलगअलग उद्देश्य के लिए अपनी सेवा देते हैं. स्वाभाविक तौर पर कह सकते हैं कि सभी जीवित प्राणी एक ही तरह के गुण नहीं दिखा सकते, एक ही काम या बात में श्रेष्ठ नहीं हो सकते हैं. हरेक व्यक्ति अलगअलग क्षेत्रों में अपना महत्त्व और कौशल रखता है यानी इस में वह माहिर होता है.

‘‘बच्चो, मुझे उम्मीद है कि अब आप सभी यह बात समझ गए होंगे कि आप के मार्क्स यानी अंक आप को यह सोचने नहीं देते कि आप सब से अच्छे हो या नहीं हो.’’

‘‘हुर्रे...’’ बच्चों ने तालियां बजाईं और खुशी से चिल्लाए, क्योंकि अधिकांश छात्रों ने औसत अंक ही प्राप्त किए थे और इस कहानी ने उन्हें एक नई रोशनी दिखाई थी, एक नई उम्मीद से उन्हें भर दिया था.

अब हैरान होने की बारी मैडम अर्पिता की थी. बच्चों ने चिल्लाना शुरू कर दिया था, ‘‘टीचर, आप सब से अच्छी हैं.’’

‘‘हम इस कहानी को अपने मम्मीपापा को भी सुनाएंगे,’’ एक छात्र ने कहा और एक दूसरा छात्र जोर से हंसा.

मैम अर्पिता ने अपना सिर हिलाया और हंस पड़ीं.

अपना सिर झुकाए दीया अब खुद पर ही शर्मिंदगी महसूस करने लगी थी. वह समझ गई थी कि टीचर क्या बताना चाह रही थीं.

वह खड़ी हो गई, संजना के पास गई और क्षमा मांगते हुए बोली, ‘‘मुझे खेद है. कृपया मुझे माफ कर दो.’’

संजना मुसकराई और अपना सिर हिलाते हुए बोली, ‘‘सबकुछ माफ है.’’

दीया मुसकराई और अपनी सीट पर लौट आई. मैम अर्पिता ने भी इस बदलाव को देखा और खुशी से मुसकरा उठीं. ●

आप के सवाल मेनका आंटी के जवाब

मेनका आंटी पशुपक्षियों से बहुत प्यार करती हैं. अब आप के सवालों का जवाब मेनका आंटी देंगी. जैसे पशुपक्षियों को खाना कैसे खिलाएं, उन से कैसे प्यार करें, कैसे उन की देखभाल करें आदि. वे एक सांसद तो हैं ही, कुशल पर्यावरणविद् भी हैं.

जानवर हमारी धरती के निवासी हैं, जितना कि हम हैं. हम उन का शिकार न कर या उन के अंगों का इस्तेमाल न कर उन का सम्मान करते हैं, तो हम अपने ग्रह और प्रकृति के प्रति सम्मान दर्शाते हैं. जिन पशुओं तथा जानवरों को हम पालतू जानवर के रूप में रखते हैं, वे पूरी तरह से हम पर निर्भर रहते हैं और उन्हें वैसे ही प्यार और सम्मान देना चाहिए जैसे हम अपने भाईबहनों को देते हैं. पक्षियों और मछलियों को पालतू जानवर के रूप में न रखें, उन्हें पिंजरे में कैद करना और दयनीय बनाना अच्छा नहीं है.

मेनका संजय गांधी

बहुत से गली के कुत्ते अधिक ट्रैफिक की वजह से मर जाते हैं. उन का जीवन बचाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

आर्जव, 12 वर्ष, हरियाणा

आप उन के ऊपर रिफ्लैक्टर लाइट्स यानी परावर्तित होने वाली लाइट्स लगा सकते हैं, लेकिन ये काफी महंगी होती हैं. आप स्पीड ब्रेकर्स भी लगा सकते हैं, लेकिन बहुत सारे स्पीड ब्रेकर्स के खिलाफ लोग हल्ला भी मचा सकते हैं. सब से बढ़िया तरीका यह है कि कुत्तों को आप के जिले में ही वैक्सीन लगवाई जाए और उन्हें रोगाणुमुक्त किया जाए ताकि उन्हें कम से कम परेशानी हो.

कुछ पक्षी क्यों नहीं उड़ सकते हैं?

रैहानुर रहमान, 9 वर्ष, रामपुर हाट

पक्षी जैसे मुर्गियां और बत्तख उड़ नहीं सकते हैं. मोर थोड़ा सा उड़ सकता है, क्योंकि वह बहुत भारी होता है. बहुत बड़े पक्षी जैसे औस्ट्रिच यानी शुतुरमुर्ग, ऐमु, कैसोवरी, पैंग्विंन भी इसी वजह से नहीं उड़ सकते हैं. कभीकभी पक्षी विक्रेता पक्षियों को पकड़ लेते हैं और उन के पंख नोच कर निकाल देते हैं, इसलिए भी वे उड़ नहीं सकते हैं. कभीकभी पक्षी पतंगों की वजह से घायल या चोटिल हो जाते हैं, ऐसा पतंग के मांजे में फंसने के कारण होता है या ये अपने घोंसले से बाहर गिर जाते हैं और तब तक उड़ नहीं पाते हैं जब तक कि ठीक न हो जाएं और उन के पंख फिर से न उग आएं.

यदि आप पालतू जानवरों, पशुपक्षियों के बारे में कुछ भी पूछना चाहें, तो अपने प्रश्न हमें भेजें, मेनका आंटी हर प्रश्न का जवाब देंगी.

writetochampak@delhipress.in

8657402248

दादाजी और गांधी जयंती

कहानी ● विवेक चक्रवर्ती

रिया और राहुल, दादाजी के साथ बगीचे में टहल रहे थे.

इस बगीचे में वहां पर तीन बंदर क्यों हैं, दादाजी?

रिया, ये तीनों महात्मा गांधी के बुद्धिमान बंदर हैं.

दादाजी, हम तो यह जानते भी नहीं थे कि गांधीजी के पास बंदर थे.

ये क्या संकेत देते हैं, दादाजी?

राहुल, महात्मा गांधी के पास कोई बंदर नहीं था. ये तो तीन सिंबोलिक यानी सांकेतिक बंदर हैं.

वह बंदर जो अपने कान ढके किनारे पर बैठा है, हमें कहता है कि बुरी बात मत सुनो. हमें किसी दूसरे व्यक्ति के बारे में न तो बुरी बात सुननी चाहिए और न ही उस पर विश्वास करना चाहिए.

राहुल, वह बंदर हमें बताता है कि बुरा मत बोलो.

और बीच में अपने मुंह को ढक कर बैठे बंदर से हम क्या सीखते हैं दादाजी?

और दादाजी, यह तीसरा बंदर हमें क्या सिखाता है?

तीसरा बंदर हमें सिखाता है कि बुरा मत देखो, जिस का मतलब यह है कि अगर तुम्हारे सामने कुछ बुरा हो जाए यानी कुछ गलत घटना घट रही हो तो तुम कुछ बोलो, ऐसा मत होने दो, यह तुम्हारी जिम्मेदारी है.

आजकल बहुत से लोग बिना मतलब के लड़ाईझगड़ा करते हैं और एकदूसरे के बारे में बुरी बात कहते रहते हैं, इसी वजह से महात्मा गांधी की शिक्षाओं का मूल्य खोता जा रहा है.

SONAL

हां, हम 2 अक्तूबर को गांधी जयंती मनाते हैं ताकि गांधीजी द्वारा सिखाए गए सबक को हम समझ सकें और अपने रोजमर्रा की जिंदगी में उन का पालन कर सकें.

नन्ही कलम से

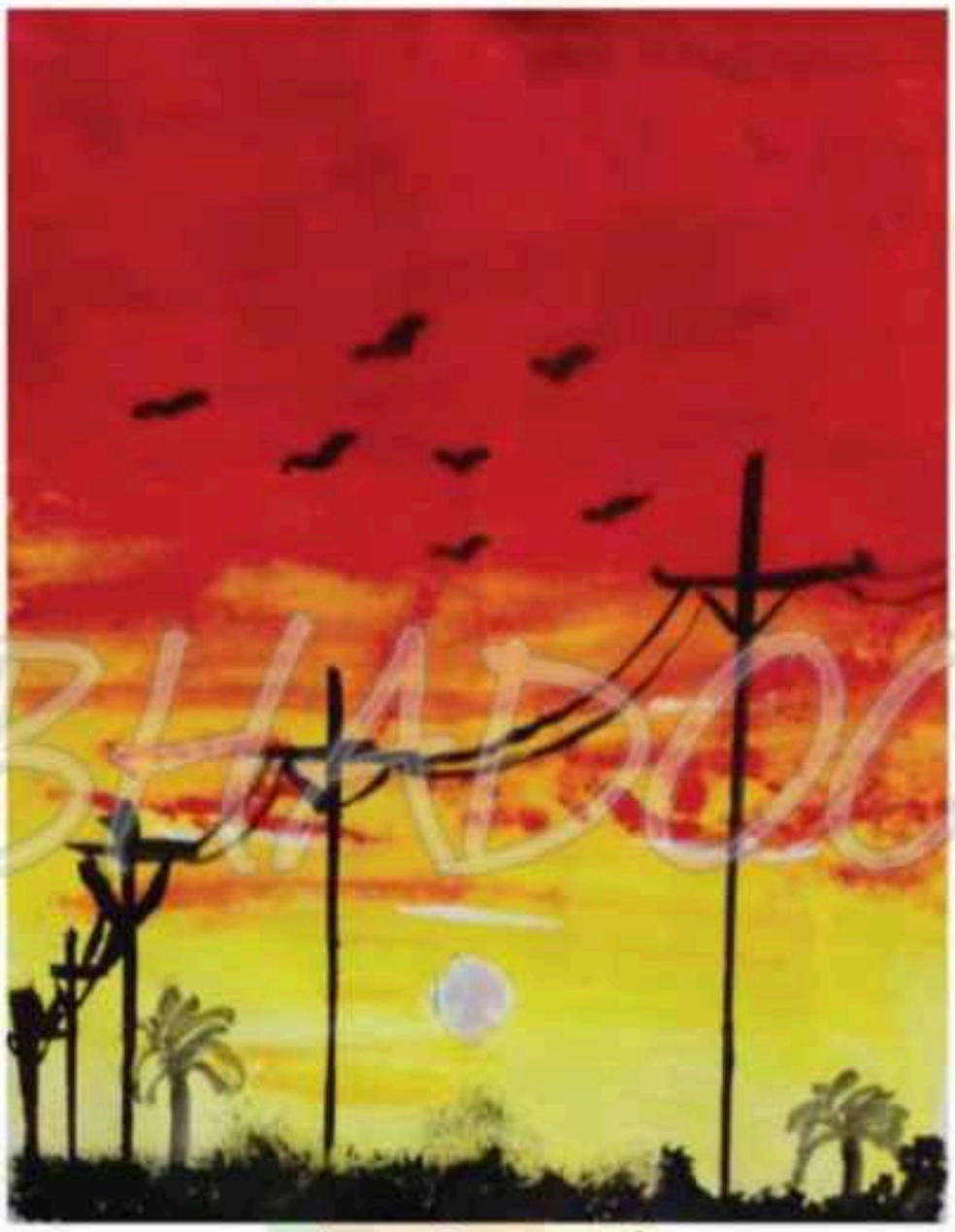

रंजना श्रीजन, 8 वर्ष
झारखंड

बढ़िया काम करें

पक्षी मेरे मेहमान हैं, वे खूबसूरत, प्यारेप्यारे घोंसले बनाते हैं, वे अपना सब से बेहतरीन प्रयास करते हैं, आप भी बढ़िया करो. मैं आराम करता हूं. यूएस पश्चिम में है, लेकिन मैं हमेशा रिक्वेस्ट करता हूं कि अपना सब से बेहतरीन कार्य करो. तनाव में कभी मत पड़ो, तुम पहले से ही बढ़िया सजेधजे हो. अपना बेहतर से बेहतर करने का प्रयास करो.

तनुषा त्यागी, 8 वर्ष
ठाणे

के. पुघजेंडी, 13 वर्ष, चैन्नई

शेर

जंगल के राजा, आप कितने शक्तिशाली हो. सुबहसवेरे आप अपनी शक्ति दिखाने के लिए जोरदार दहाड़ लगाते हो. उस के बाद आप शिकार पर निकल पड़ते हो और अपना शिकार करते हो, अपने शक्तिशाली बच्चों को जोकि भूखे हैं, खाना खिलाते हो. पूरे जंगल में आप अपने बच्चों की सुरक्षा शिकारियों और लकड़हारों से करते हो. वे जंगल में पेड़ों को काटते है और जानवरों को भी मारते हैं. चूंकि आप जंगल के राजा हो, आप बब्बर शेर हो और अत्यंत शक्तिशाली हो. आप शिकार करते हो, क्योंकि आप को पता है कि इकोस्टिम को कैसे संतुलन में रखा जाता है. आप हमें प्रेरणा देते हो, क्योंकि आप हर मौसम में शिकार करते हो, चाहे गरमी हो या जाड़ा आप हमें सिखाते हो कि तरह से हम अपने जोश यानी स्पिरिट को ऊंचा रख सकते हैं. आप सच में शक्तिशाली शेर हो.

अर्णव प्रताप जांगिड़, 11 वर्ष, चैन्नई

अमालिया सिंह, 5 वर्ष
बैंगलुरु

अर्नव प्रताप जांगिड़, 11 वर्ष, चैन्नई

लक्ष्य

हमारी कड़ी मेहनत को कटोरे में डाल कर विजय हमारे लक्ष्यों को प्राप्त कर रहा है. लक्ष्यों को हासिल करने के लिए खुद को जिद्दी बनाओ और कठिनाइयों को तपते कोयले में जला डालो, सोने की तरह बन जाओ जो बहुत ही बोल्ड होता है, जिसे आग में तपाया जाता है तो वह और ज्यादा निखर जाता है. आग जैसा संघर्ष तो एक शुरुआत मात्र है, लेकिन अपने दिल में दृढ़ता और विश्वास हो तो हम दुनिया को जीत लेंगे, जीत की ऊंचाइयों को अपनी कड़ी मेहनत से प्राप्त कर लेंगे, चढ़ाई चढ़ लेंगे. जीत की सीढ़ियां चढ़ना हालांकि ऐसा बिलकुल नहीं है, लेकिन यह थोड़ी सी कठिन मेहनत लगन से प्राप्त करना आसान नहीं है, क्योंकि इसे साहस और संघर्ष से ही प्राप्त किया जा सकता है. अपने पैरों पर चलते हुए आगे बढ़ते रहना है जैसे एक पौधा अपने नन्हेपन से आगे बढ़ता रहता है और याद रखें कि आप एक दिन छोटे थे और आज आप थोड़ा बड़े हो गए हो. बाकी भूल जाओ और बाधाओं से लड़ो, जरा भी देर न करो नहीं तो तुम पिछड़ जाओगे. आगे बढ़ना तब तक जारी रखो जब तक कि जीत का फल प्राप्त न कर लो, जीत की राह में बहुत सी टूटफूट और बाधाएं हैं, लेकिन यह भोजन या फल जीत यानी सफलता के फल हैं, ये आप के अतीत के फल हैं. इसलिए अपना समय बरबाद न करें, ऐसा न हो कि आप आसमान में चमकने में असफल हो जाएं. जाइए, अपने जीवन का उज्ज्वल बनाने के लिए कुछ प्रकाश की किरणें ढूंढ़िए. सफलता यानी जीत का रास्ता बहुत ही लंबा है और आप एक दिन उस तक जरूर पहुंचेंगे.

प्रज्ञा, 15 वर्ष, छत्तीसगढ़

एक बूढ़ा

एक बूढ़ा पेड़ था. उस पर मधुमक्खियों ने अपने बहुत सारे छत्ते बना रखे थे. यह पेड़ बहुत ही नम्र और सहिष्णु था. हरेक को यह छाया फूल और फल प्रदान किया करता था. उस के पास जो कुछ भी था, उस में वह कभी भी उदास या खिन्न नहीं होता था. एक दिन एक लकड़हारा उस के तने को काटने के लिए आया. वह कुल्हाड़ी के साथ तैयार हो गया. तभी एक बंदर ने उसे रोका और कहा, ''यह तुम क्या कर रहे हो?'' लेकिन लकड़हारे ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया. बंदर ने उसे रोकने की हर बेहतर कोशिश कर ली, ताकि उस के बर्बर और क्रूर कार्य से पेड़ बच जाए. लेकिन फिर भी उस लकड़हारे ने जब अपनी कुल्हाड़ी से पेड़ को छुआ, तो बंदर ने उस पर हमला कर दिया और उसे डरा दिया. पेड़ खुद को बचाए जाने के लिए बंदर का अभारी था और पेड़ ने यह सुनिश्चित कर लिया कि वह बंदर को किसी भी परेशानी या समस्या का सामना नहीं करने देगा. इस से यह साबित होता है कि अगर हम दूसरों की रक्षा करते हैं तो वे भी हमारे भाईबहन की तरह ही बन जाते हैं. इसलिए सभी के साथ दोस्ताना व्यवहार करें, नहीं तो मुसीबत के समय में आप की भी कोई मदद करने आगे नहीं आएगा.

अनय पंडित, 10 वर्ष

महाराष्ट्र

यह एक पेपर मेशी (लुगदी) है. इसे हमारी 9 वर्षीय पाठिका वाण्या जैन ने अहमदाबाद से बना कर भेजा है.

अपनी पहेलियां, चुटकुले, चित्र या कहानी अपने नाम, उम्र, पता तथा फोन नं. के साथ लिखें:

चंपक, दिल्ली प्रैस, ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, वडाला, मुंबई- 400031

writetochampak@delhipress.in 8657402248

www.facebook.com/ChampakMagazine

http://www.youtube.com/ChampakSciQ

हम आप की सामग्री लौटा नहीं सकते इसलिए हमें भेजी सामग्री की कापी अपने पास रखें.

अंतर बताओ

यहां 10 गलतियां हैं. आप उन गलतियों को ढूंढ़ कर बताएं.

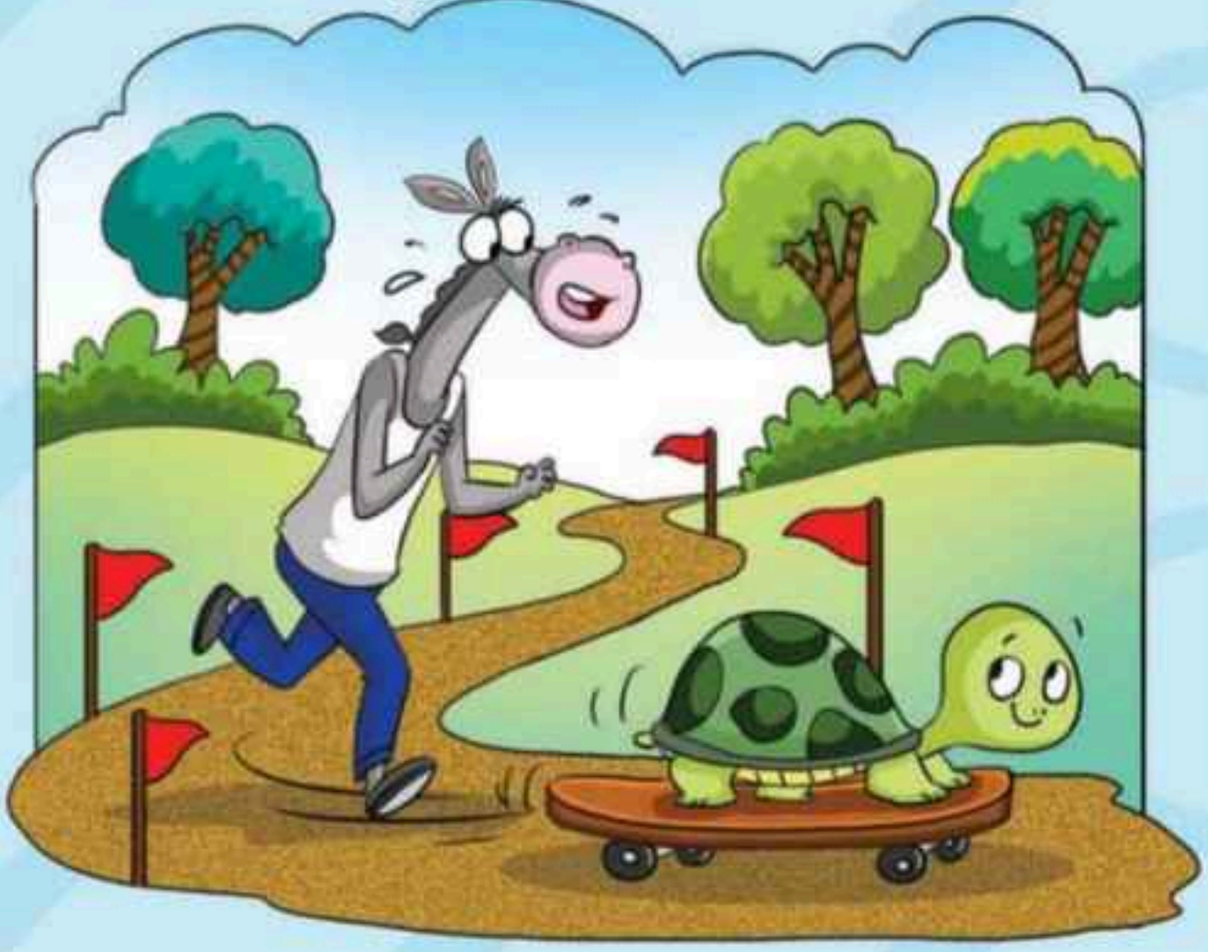

हमारा और उन का गणतंत्र

भारत जैसे बहुत से देश गणतंत्र प्रणाली का पालन करते हैं, जहां देश में रहने वाले लोग अपने नेता का वोटिंग यानी मताधिकार का उपयोग कर चुनाव करते हैं.

गणतंत्र का यह सिस्टम सिर्फ मनुष्यों के लिए ही खास नहीं है बल्कि अफ्रीकन पैंटेड डौग्स यानी कुत्ते जो कि अफ्रीका के जंगलों में पाए जाते हैं यानी ये जंगली कुत्ते हैं, ये भी अपनी जटिल समस्या या निर्णय करने के लिए इस गणतंत्र प्रणाली का पालन करते हैं. इस में सब से मजेदार बात यह है कि ये छींक कर अपना वोट डालते हैं.

अफ्रीकन पैंटेड डौग्स दक्षिण अफ्रीका के उपसहारा क्षेत्र के मैदान और जंगलों में पाए जाते हैं. ये कुत्ते अत्यंत सामाजिक जानवर हैं और एक समूह में रहते हैं जिसे पैक्स कहा जाता है. ये भोजन साझा करने, एकदूसरे की देखभाल करने स्पर्श और कौल्स का उपयोग कर के संवाद करने के लिए भी जाने जाते हैं जैसा मनुष्य करते हैं. संवाद का एक ऐसा ही तरीका छींकना है. कुत्तों पर किए गए शोधों में यह देखा गया कि शिकार करने के दौरान जब इन पैक्स यानी समूह एकसाथ जमा होते हैं, तो पैक्स में हर कोई इस बात का निर्णय करने के लिए छींकता है कि उस क्षण शिकार करना है या नहीं करना है. अगर एक कुत्ता राजी होता है तो वह एक छोटी सी छींक मारेगा, इसी तरह के समान संकेत के लिए जैसा कि दूसरे ने मारा. जितना ज्यादा छींकने की संख्या बढ़ती जाएगी, इस का मतलब है कि समूह के ज्यादातर सदस्य भोजन के लिए शिकार पर जाना पसंद कर रहे हैं.

कुछ अध्ययनों से पता चला है कि शिकार के दौरान समूह का नेता मर जाता है, एक नेता का चुनाव करने के लिए जंगली अफ्रीकन पैंटेड डौग्स भी एक वोट डालने की प्रणाली का इस्तेमाल करते हैं.

छींकने के अलावा, ईरी कौल्स यानी डरावनी पुकार के रूप में भी वोट डाला जाता है, जिस में कि पैक्स यानी समूह के सदस्य जिसे उत्तराधिकारी समझते हैं, उस के पक्ष में जोरजोर से हूपिंग और हूटिंग साउंड यानी चीखनचिल्लाने की आवाज निकालना शुरू कर देते हैं.

अफ्रीकी जंगली कुत्ते जब जंगलों में रहते हैं तो आमतौर पर 11 साल की आयु तक जिंदा रहते हैं.

अजनबी

कहानी • संदीप पांडे

टिया बुलबुल ने अपने घोंसले से झांक कर देखा तो उस को अपनी दोस्त सावी कबूतर नहीं दिखी. ''ओह, बगैर दोस्तों के बाहर निकलने का क्या मजा? ''कह कर टिया ने अपनी आंखें बंद कर लीं.

थोड़ी देर बाद ही सावी की चहचहाट ने टिया को खुशी से भर दिया. टिया ने अंगडाई ली और पंख पसारे अपने घोंसले से बाहर आ गई.

''हैलो टिया, ये लो, मैं आप के लिए स्वादिष्ठ बीज लाई हूं.''

''वाह, बीज, मजा आ गया,'' टिया ने दोस्त सावी को धन्यवाद दिया.''

''सुनो टिया, कल तुम नारियल के बड़े अच्छे टुकड़े लाई थी. ये तुम्हें कहां मिले थे?'' कल का स्वाद याद करते हुए सावी ने चहक कर कहा.

''अरे, ये यहां से थोड़ी सी दूरी पर हैं. तुम क्या कह कर रही हो.''

''हम दोनों के पास पंख हैं. चलो, उड़ कर वहीं चलते हैं,'' सावी ने कहा और उड़ गई.

10 मिनट उड़ कर वे एक हरीभरी जगह पहुंच गए. यह शर्मा अंकल का बगीचा था जहां छोटीबड़ी हलकीफुलकी कई प्रकार की चिड़ियाओं के घोंसले थे.

बड़की बुलबुल, महकी मैना, कल्कि कोयल, नीली

BHADOO SAHIB

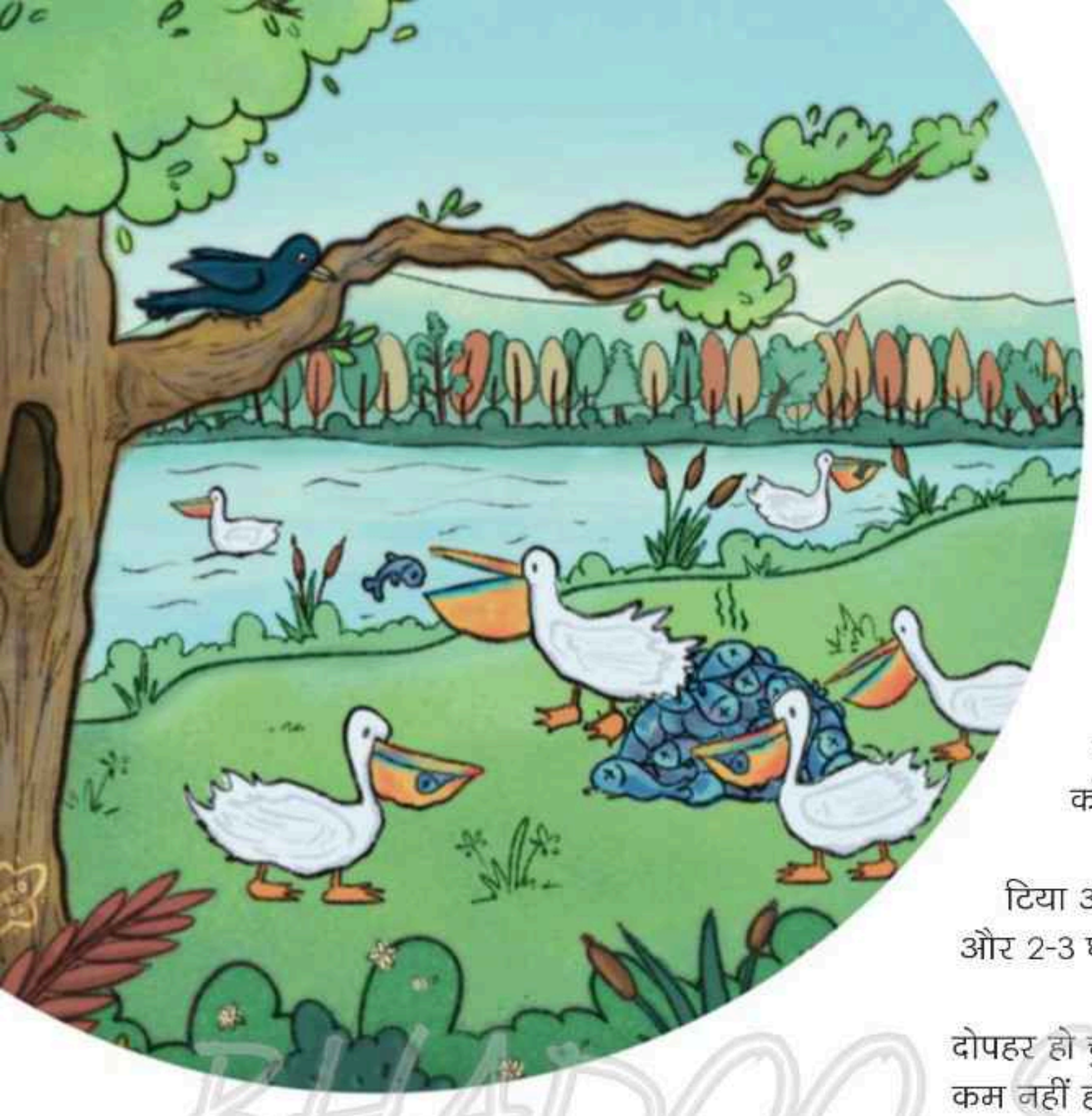

सन बर्ड, बहुत सारी गौरैया कुछ टेलर बर्ड के साथ चहचहाते मिलजुल कर रहते थे.

''ओह, यह तो बहुत सुंदर जगह है, टिया,'' कह कर सावी चहकने लगी.

''अरे बिलकुल, वह देखो, शर्मा अंकल ने नारियल के टुकड़े परोस कर रखे हैं. चलो, चुग कर उन का आनंद ले लें,'' टिया ने कहा तो सावी ने अनुमति दी.

''हां, चलो चलो,'' पर अंकल इतने नारियल हम को क्यों खिलाते हैं.

''अरे, मैं तो कल ही आई, मुझे नहीं पता, चलो, किसी से पूछते हैं,'' टिया ने कहा और सावी ने सहमति दी.

दोनों ने चुगते हुए देखा कि सब पक्षी खुशीखुशी चहक रहे हैं.

गिनी गौरैया ने राज खोला और कहने लगी. ''शर्मा अंकल को फोटो खींचने का बेहद शौक है. इसीलिए वे हमें खाना खिलाते हैं और चुपके से हमारे फोटो खींच लेते हैं.''

''अच्छाअच्छा,'' कह कर सावी और टिया ने गरदन हिलाई. सभी पक्षी चहक रहे थे, लेकिन कल्कि कोयल थोड़ा शरारत कर रही थी. वह इधरउधर उड़ कर दूसरी चिड़ियाओं को तंग करने का प्रयास करती तो सब मिल कर उस को डांटते थे.

टिया और सावी को भी उन का खेल अच्छा लगा और 2-3 घंटे में उन की सब से दोस्ती हो गई.

दोपहर हो चुकी थी पर कल्कि कोयल की शरारत कम नहीं हो रही थी. अब तंग आ कर कबूतरों और तोतों ने उसे दूर जाने को कह दिया. इतना ही नहीं उसे डांटडपट कर, सजा देते हुए बहुत दूर खदेड़ भी दिया. कल्कि उड़ती हुई झील किनारे पहुंच गई. वह हैरान हो कर एक पेड़ पर बैठ कर वहां का नजारा देखती रही.

उस ने पीली चोंच वाले कई बड़े सफेद पक्षी झील में उड़तेतैरते देखे. उस ने ऐसे पक्षी पहली बार देखे थे. उन सब का व्यवहार हैरान करने वाला था. अचानक कोई पक्षी उड़ता, पानी के अंदर गोता लगाता और अपनी लंबी चोंच में मछली पकड़ कर मजे से खाता. झुंड के झुंड ऐसे ही एकसाथ भोजन करते प्रतीत हो रहे थे. तभी एक बड़ा सा पक्षी लंबी उड़ान भर कर उस की बगल मे बैठ गया और अपनी चोंच से पंखों को साफ करने लगा. कल्कि ने डरते हुए उस से उस का नाम पूछा तो पहले तो उस ने उस को नजरअंदाज किया, फिर मधुर आवाज में पूछा.

पक्षी ने उत्तर दिया और कहा कि यह 'ग्रेट वाइट पेलिकन' है. वे हजारों मील का सफर कर के सर्दियां बिताने यहां हर बरस आते हैं. उन के देश में बहुत

ज्यादा सर्दी पड़ती है और ऐसी कड़क ठंड वहां बिताना जानलेवा हो जाता है. भोजनपानी और प्रजनन के लिए उन को गरम इलाकों की ओर पलायन करना पड़ता है.

''लेकिन आप की चोंच थैली जैसी क्यों है?'' कल्कि ने पूछा.

इस से हमें मछली पकड़ने में आसानी रहती है. हम मछली को थैली में डाल पानी निकाल देते हैं और फिर आसानी से मछली निगल लेते हैं. हर दिन हम लगभग डेढदो किलोग्राम मछली खाते हैं और यह हमें स्वस्थ रखती हैं.''

लेकिन कल्कि ने पूछा, ''आप इतना कैसे उड़ते हैं और फिर वापसी कैसे कर लेते हैं?''

हम लोग रोज 200 किलोमीटर तक की यात्रा कर लेते हैं. हमारे लंबे पंख हमें तेज और देर तक उड़ने में मदद करते हैं.

''अरे, बाप रे, 200 किलोमीटर,'' कल्कि ने हैरानी से कहा. अभी तक तो वह अपने से छोटी चिड़ियाओं पर रौब जमा कर अपने को बहुत बड़ा समझती थी.

पेलिकन के चेहरे और गुलाबी रंग ने भी उसे चौंका दिया था, सो उस ने उस का कारण भी पूछ ही लिया. पेलिकन ने बताया कि प्रजननकाल के दौरान नर पक्षी का चेहरा गुलाबी और मादा का नारंगी हो जाता है. वे अपने अंडों को मिट्टी में घोंसला बना कर रख बच्चों के बड़े होने तक नरमादा दोनों मिल कर उन का खयाल रखते हैं.

कल्कि आज अपने नए विदेशी दोस्त से मिल कर बहुत खुश थी. पेलिकन ने उसे आज नई जानकारी और आभास से परिचय जो करा दिया था. कल्कि ने उसे शर्मा अंकल के बगीचे की सैर पर आने का निमंत्रण दिया.

कल्कि का प्यार भरा निमंत्रण पा कर उस कहा,

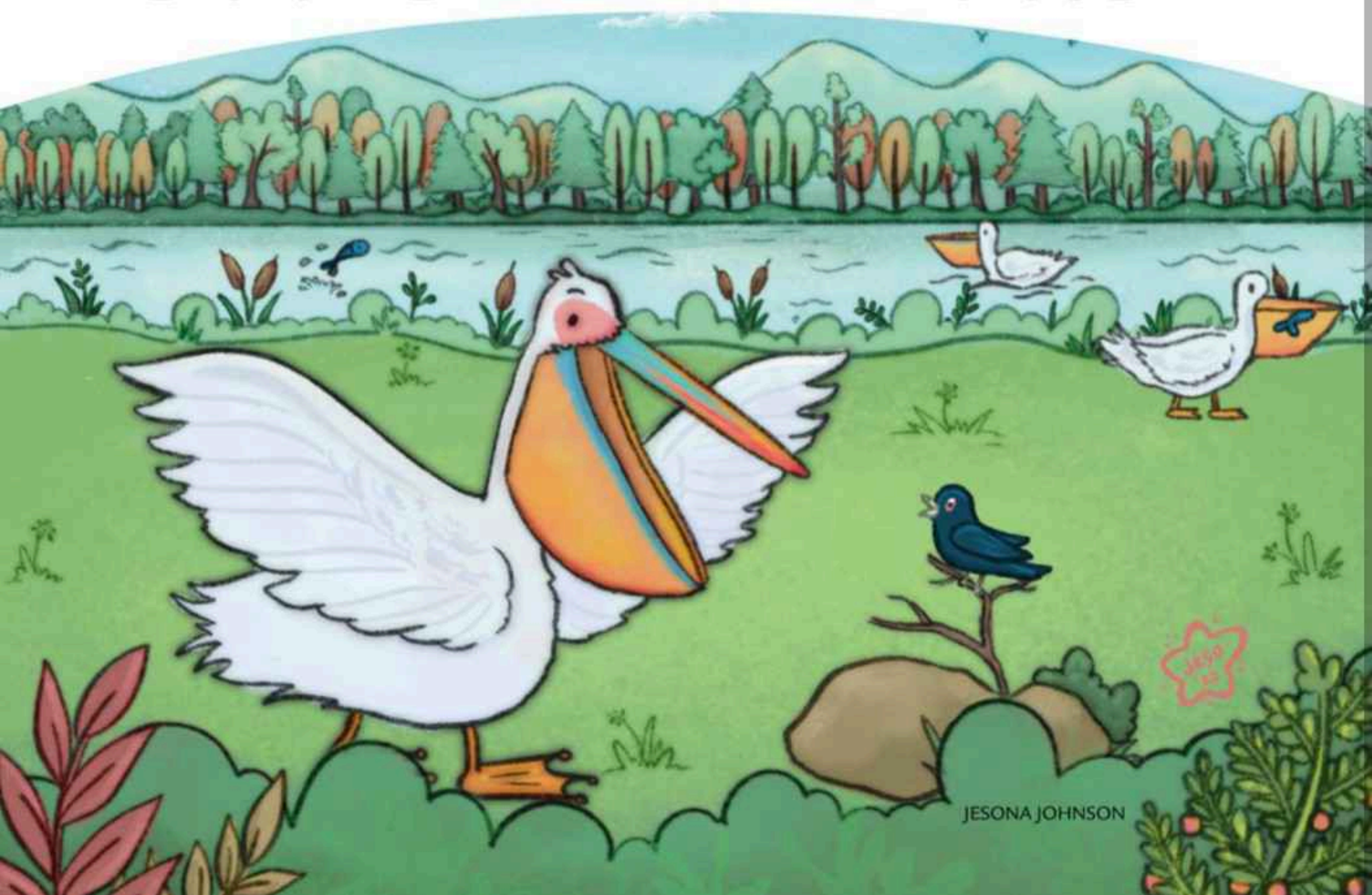

बिलकुल, कल्कि. यदि यहां से फुर्सत मिली तो जरूर आऊंगा,''

जब कल्कि उड़ती हुई वापस लौटी तो टिया, सावी तथा अन्य पक्षी बहुत चिंता कर रहे थे कि आज कल्कि न जाने कहां खो गई. वे सब आपस में यही बातें कर रहे थे कि गुनगुनाने की चहचहाट सुनी. कल्कि वापस आ गई थी.

''अरे हां, आज की बात तो सुनो.''

''हमें आशा है कि तुम नाराज नहीं होंगे,'' कबूतरों और तोतों ने कहा.

''प्रिय कल्कि, बिलकुल नहीं,'' सब ने कहा पर वह बोलती रही.

सभी पक्षियों ने देखा कि कल्कि बदल गई थी और उन्हें पेलिकन के बारे में बता रही थी. वे खुश थे कि कल्कि बदल गई थी. वह दूसरों को परेशान न करने का खुद से वादा कर चुकी थी.

टिया और सावी ने अपने पंख फैलाए और अपने घोंसलों में लौट आए.

''बायबाय, सुबह फिर मिलते हैं,'' सब पक्षियों ने एकदूसरे को अलविदा कहा. ●

उत्तर पृष्ठ :

पृष्ठ 19 : छिपे चित्र ढूंढ़ें :

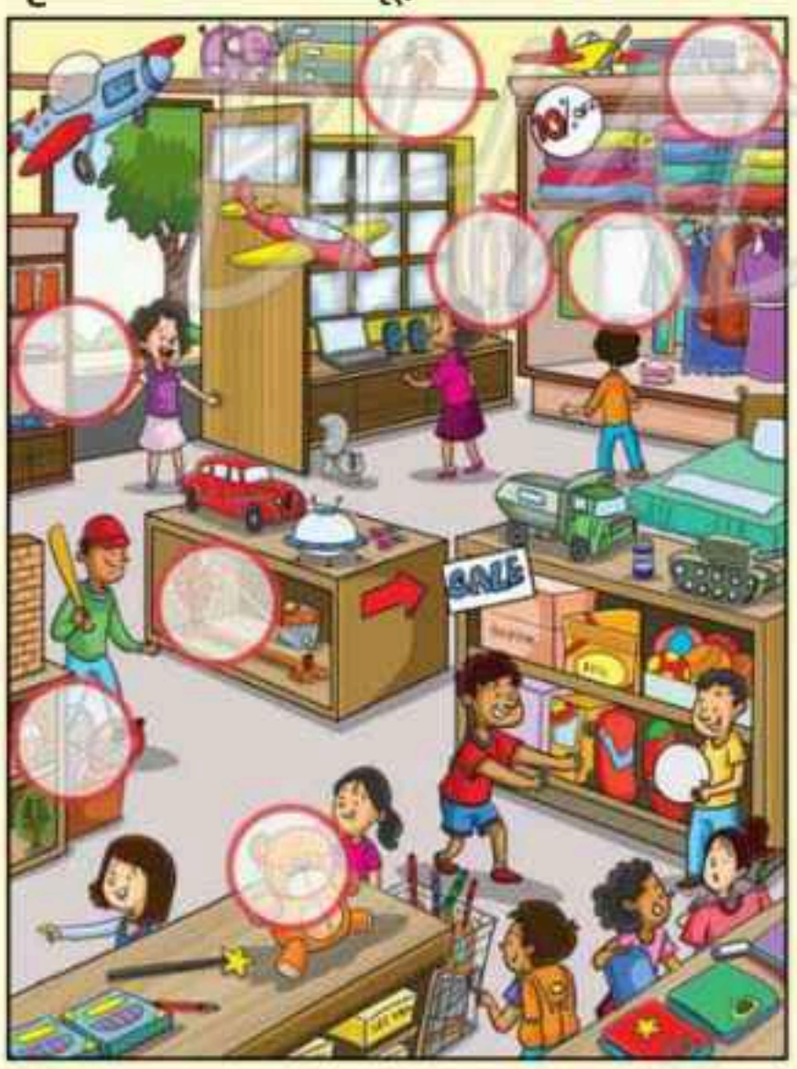

पृष्ठ 23 : मिलान करें :

1 - D, 2 - E, 3 -A,
4 - B, 5 - C.

पृष्ठ 29 : रास्ता बताओ :

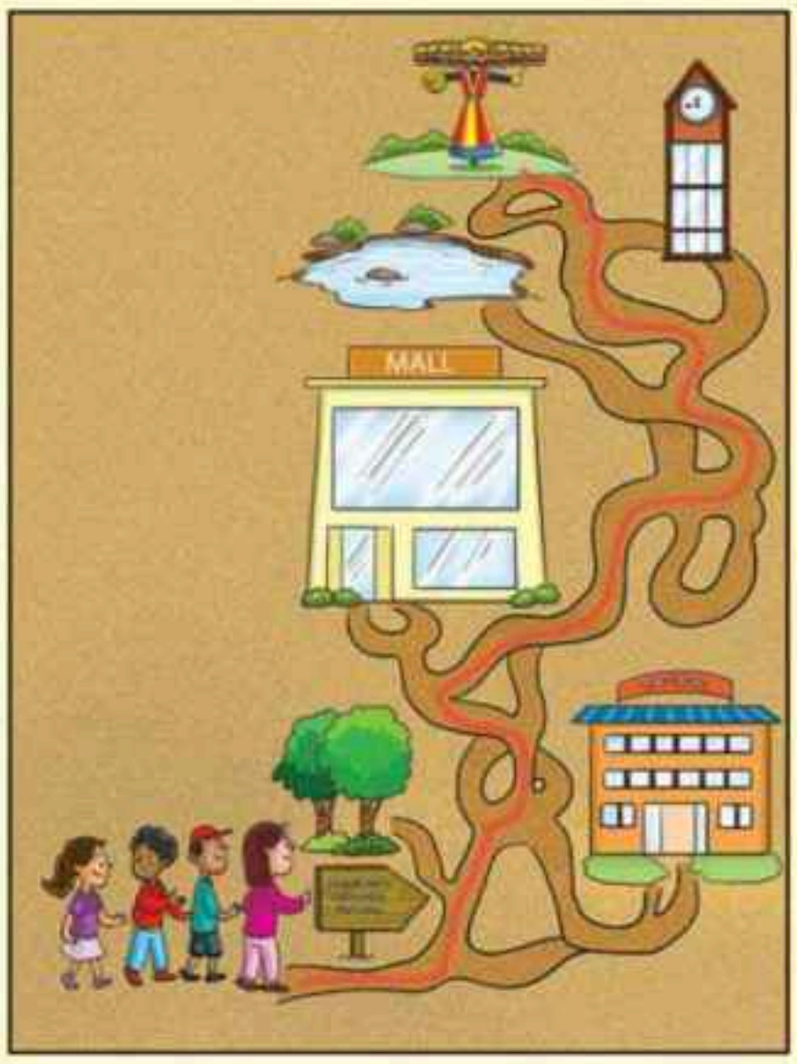

पृष्ठ 33 : शब्द ढूंढ़ें :

तं	पिं	बौ	पि	पि	लौ	अं	पिं	इं	पिं	ए	पि	इ
कौ	जा	पिं	गि	टा	र	फिं	सिं	त्र	ढिं	फिं	ठि	ण
तं	इ	बौ	जिं	ब्र	टिं	अं	टिं	इ	टिं	की	बो	ई
श्र	लो	इ	श्र	इ	श्र	इ	त्र	आ	पा	इ	ऊ	ऊ
कु	फो	बौ	त्र	फ़	व्र	अं	ब्र	इ	लु	ए	पिं	ड.
बं	न	झ	श्र	वी	णा	प्र	ट्र	ट्र	पा	अः	लु	चं
श्र	श्र	बौ	श्र	ट्र	प	श्र	सी	ड	त्र	ए	तु	झ
कु	त्र	ट्र	त्र	ब्र	द	अ	स्र	झां	पा	त्र	पिं	अ
के	वा	य	लि	न	रे	ट्र	रे	झ	सी	अः	तु	का
कु	के	पे	के	त्र	दं	प्र	ट्र	इ	पा	ए	पिं	र्डि
क	क्र	बौ	च	ट्र	पं	अं	त्र	रे	सीं	इ	वे	य
च्र	वे	ल	वे	त्र	फ्र	वे	सीं	रे	तु	पिं	ब	न
चे	सं	बौ	ठं	तं	उ	के	लै	ली	पौ	ए	तु	ड
कु	पं	ट्र	दं	त्र	ऐ	अं	चं	छं	पु	अं	ठिं	कं
चे	ज	इ	अ	ल	आ	कुं	सौ	इ	पा	ए	पिं	ढ़
चौ	ट्र	म	ल	आं	क	आ	अं	बां	दौ	सौ	तु	ढ
कु	झ	स	त्र	जं	अः	छं	जं	सु	छं	अः	पिं	ढ़
रा	टं	बौ	दं	कं	दं	अं	अं	री	पौ	ए	तु	कं
कु	पे	फु	पे	फु	पे	इ	लौं	लौं	कौ	औ	च	ट